92

राष्ट्रभाषा का

सरल व्याकरण

भाग – 9

• राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा •

राष्ट्रभाषा का

सरल व्याकरण

० ० ०

[भाग : १]

० ० ०

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
वर्धा

० ० ०

प्रकाशककी ओरसे

●

शुद्ध भाषाके अध्ययनमें व्याकरणका अपना एक विशेष स्थान है। व्याकरणके नियमों और उनके प्रतिपादनकी कठिन पद्धतिसे ऊबकर विद्यार्थीगण व्याकरणको कठिन एवं रूखा विषय मान बैठते हैं। अतः समितिको एक ऐसी पुस्तककी आवश्यकता थी, जो व्याकरणके सिद्धान्तोंको सरल एवं सरल ढंगसे प्रस्तुत करे।

आशा है, प्रस्तुत पुस्तक 'राष्ट्रभाषा प्रारम्भिक' और 'राष्ट्रभाषा प्रवेश' परीक्षाके विद्यार्थियोंको व्याकरण सम्बन्धी आवश्यक जानकारी देनेमें सहायक सिद्ध होगी।

यह इस पुस्तकके सातवें संस्करणका नवाँ पुनर्मुद्रण है।

मन्त्री,

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

●

अनुक्रमणिका

राष्ट्रभाषाका

सरल व्याकरण

[भाग : १]

पाठ : १

वर्णमाला

(१) हिन्दी जिस लिपिमें लिखी जाती है, वह '**नागरी**' या '**देवनागरी**' कहलाती है।

(२) वर्णोंका समूह '**वर्णमाला**' कहलाता है।

(३) नागरी वर्णमालाके दो भाग हैं—'**स्वर**' और '**व्यंजन**'।

(४) हिन्दीकी वर्णमालामें ४४ वर्ण हैं, जिनमें ११ स्वर और ३३ व्यंजन हैं—

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

व्यंजन

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण त थ द ध न
प फ ब भ म य र ल व श ष स ह

(५) नागरी वर्णमालाके दो और अक्षर हैं, अनुस्वार और विसर्ग–अं, अः। ये दोनों एक प्रकारके व्यंजन हैं। अनुस्वार का उच्चारण लगभग हलन्त ङकारके समान और विसर्ग का उच्चारण हलन्त हकार के समान होता है।

(६) हिन्दी वर्णमालामें व्यंजनोंके बाद बहुधा तीन और अक्षर पाए जाते हैं––क्ष, त्र, ज्ञ। ये तीनों दो व्यंजनोंके मेलसे बने संयुक्ताक्षर हैं। इनका उल्लेख अगले पाठमें किया जाएगा।

(७) नागरी वर्णमालाके सभी अक्षरोंपर शिरोरेखा होती है। यह रेखा कुछ अक्षरोंपर खण्डित होती है। जैसे––भ, ध।

(८) स्वरकी सहायताके बिना व्यंजनका उच्चारण हो ही नहीं सकता। ऊपर व्यंजनके जितने अक्षर दिए गए हैं, वे अकारयुक्त व्यंजन हैं। व्यंजन की अकार ध्वनि निकाल देने पर जो अंश रह जाता है, वह '**हल्**' कहलाता है। ऐसे अक्षरके नीचे तिरछी रेखा लगाई जाती है। ऐसे अक्षर '**हलन्त**' कहलाते हैं––क्, ग्, प्, ह् आदि।

(९) जब व्यंजनके साथ '**अ**' को जोड़कर और कोई स्वर जोडा जाता है, तब उस स्वरका चिह्न लगाया जाता है, जो 'मात्रा' कहलाता है।

(१०) स्वरोंकी मात्राएँ तथा व्यंजनोंके साथ उन्हें जोड़नेकी रीति यों है––

स्वर : अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अं अः

मात्रा : – ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ ं ः

व्यंजनके साथ मात्राओंका मेल––

क का कि की कु कू कृ के कै को कौ कं कः

(११) सभी व्यंजनोंके साथ ऐसी मात्राएँ लगाई जा सकती हैं। मात्राएँ लगानेका यह क्रम '**बारहखड़ी**' या '**ककहरा**' कहलाता है।

(१२) '**र**' के साथ उ और ऊ की मात्राएँ जोड़ने पर उसके दो-दो रूप बनाते हैं––**रु–रु; रू–रू**।

(१३) हलन्त व्यंजनके साथ जब स्वरयुक्त व्यंजनका मेल होता है, तब हलन्त व्यंजनका खण्डित रूप हो जाता है। व्यंजनोंके खण्डित रूप यों हैं—

व्यंजन : क ख ग घ च ज झ ञ ण त

खण्डित रूप : क्‍ ख्‍ ग्‍ घ्‍ च्‍ ज्‍ झ्‍ ञ्‍ ण्‍ त्‍

व्यंजन : थ ध न प फ ब भ म य ल

खण्डित रूप : थ्‍ ध्‍ न्‍ प्‍ फ्‍ ब्‍ भ्‍ म्‍ य्‍ ल्‍

व्यंजन : व श ष स क्ष त्र

खण्डित रूप : व्‍ श्‍ ष्‍ स्‍ क्ष्‍ त्र्‍

(१४) जब हलन्त र् के साथ कोई व्यंजन जोड़ा जाता है, तब 'र्' का र्‍ हो जाता है। यह रेफ कहलाता है।

(१५) किसी व्यंजनके साथ जब 'र्' जोड़ा जाता है, तब उसका रूप बहुधा ्र हो जाता है। कुछ व्यंजनोंके साथ जोड़े जानेपर उसका रूप ^ होता है।

(१६) नागरी अंक ये हैं—

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

पाठ : २

संयुक्ताक्षर

(१) इन शब्दोंको पढ़िए :—

शब्द; युक्त; सत्य; शास्त्र।

पहले शब्दमें श अकारयुक्त व्यंजन है और दूसरा अक्षर हलन्त 'ब्' और अकार युक्त द व्यंजनका मेल है। यह दूसरा अक्षर संयुक्ताक्षर कहलाता है। वैसे ही क्त, त्य और स्त्र संयुक्ताक्षर हैं।

जब दो या अधिक व्यंजनोंके बीचमें स्वर नहीं रहता, तब उन व्यंजनोंका समूह संयुक्ताक्षर कहलाता है और वह एक ही अक्षर माना जाता है।

उपर्युक्त उदाहरणमें हर शब्दोंमें दो-दो अक्षर हैं। सचमुच पहले तीन शब्दोंमें तीन-तीन व्यंजनोंकी ध्वनि और चौथे शब्दमें चार व्यंजनोंकी ध्वनि है।

शब्द = श + ब् + द

युक्त = यु + क् + त

सत्य = स + त् + य

शास्त्र = शा + स् + त् + र

(२) क्ष त्र और ज्ञ संयुक्ताक्षर हैं।

क्ष = क् + ष; त्र = त् + र; ज्ञ = ज् + ञ

(३) छपाईकी सुविधाके विचारसे आजकल संयुक्ताक्षरके पूर्व-व्यंजनके नीचे हलन्त चिह्न देनेका क्रम प्रचलित है। परन्तु अनादि कालसे संयुक्ताक्षरमें व्यंजनके खण्डित रूपके साथ ही व्यंजन जोड़नेका क्रम चल रहा है। जैसे :—सच्चा = सच्‌चा; मित्र = मित्‌र आदि।

(४) पिछले पाठमें व्यंजनोंके जो खण्डित रूप दिए गए हैं, उनके साथ जोड़नेवाले नए व्यंजन पार्श्वमें जोड़े जाते हैं। जैसे :—

क्क; ख्य; ग्व; घ्य; च्च; ज्ज; झ्झ; ञ्ज; ण्य; त्त; थ्थ; ध्य; न्य; प्य; प्त; ब्य; भ्य; म्य; य्य; ल्व; श्म; स्त; क्ष्य; त्र्य।

श्म; श्च; आदिके **श्म श्च** आदि रूप भी हैं।

क्रमशः **क्त, त्त** रूप भी हैं।

(५) अन्य व्यंजनोंके (र को छोड़कर) हलन्त रूपके साथ जब कोई अन्य व्यंजन जोड़ा जाता है, तब बहुधा वह नया व्यंजन पूर्व-व्यंजनके नीचे लिखा जाता है :—

ङ्+क=ङ्क; ट्+व=ट्व; ट्ट; ड्ड; द्ध; द्द।

(६) इन व्यंजनोंमें भी कुछके साथ नए व्यंजन पार्श्वमें जोड़े जाते हैं। जैसे :—**द्य, द्य।**

(७) 'ह' के साथ जब व्यंजन जोड़ा जाता है, तब उस संयुक्ताक्षरका रूप यों होता है :—**ह्व; ह्न; ह्य;** आदि।

(८) 'र' के साथ जब कोई व्यंजन जोड़ा जाता है, तब र का चिह्न '॑' जुड़नेवाले व्यंजनके ऊपर लगाया जाता है :—**र्+क=र्क; र्+म=र्म** आदि।

(९) जब किसी व्यंजनके साथ 'र' जोड़ा जाता है, तब उसका '्र' चिह्न उस व्यंजनके पार्श्वमें बाईं ओर लगाया जाता है :—**क्+र=क्र; प्+र=प्र; स्+र=स्र।** कुछ व्यंजनोंमें 'र' का '‸' चिह्न नीचे लगाया जाता है :—**द्+र=द्र; ड्+र=ड्र** आदि।

(१०) कुछ संयुक्ताक्षरोंके रूप अनियमित हैं--

क्+त=क्त;	(क्त)
त्+त=त्त;	(त्त)
द्+त=द्य;	(द्य)
श्+च=श्च;	(श्च)
श्+र=श्र;	(श्र)
श्+व=श्व;	(श्व)
क्+ष=क्ष;	(क्ष)
त्+र=त्र;	(त्र)
ज्+ञ=ज्ञ;	(ज्ञ)

अभ्यास

१. नीचे लिखे शब्दोंके संयुक्ताक्षरोंको इकट्ठा करके लिखिए--
   क्रूर; नक्षत्र; द्वन्द्व; व्यक्ति; बन्धु; मट्ठा।
२. नीचे लिखे शब्दोंके संयुक्ताक्षरोंको अलग करके लिखिए--
   शान्ति; पर्व; वृक्ष; ह्रस्व; दृष्टि।

पाठ : ३

उच्चारण

(१) ये शब्द पढ़िए—

(क) ऐसा, है, मैं, सैर।

(ख) भैया, ऐक्य, कैलास, हैरान।

'क' वर्गके शब्दोंमें ऐकार का उच्चारण '**अय्**' जैसा है और ख वर्गके शब्दोंमें '**अइ**' जैसा है।

हिन्दीमें 'ऐ' के उच्चारण के दो भेद हैं।

(२) ये शब्द पढ़िए—

(क) चौड़ा, सौ।

(ख) मौसी, फौज, औषधि।

(ग) मौसम, मौका, कौन।

'क' वर्गके शब्दोंमें 'औ' का उच्चारण '**अव्**' जैसा, 'ख' वर्गके शब्दोंमें '**अउ**' जैसा और ग वर्गके शब्दोंमें '**अओ**' जैसा होता है।

हिन्दीमें 'औ' के उच्चारणके तीन भेद हैं।

(३) ये शब्द पढ़िए—

(क) अङ्क, चञ्चल, अण्डा, अन्तर, चम्पा।

(ख) अंक, चंचल, अंडा, अंतर, चंपा।

'क' विभागके शब्दोंमें क्रमशः ङ, ञ्, ण्, न् और म् व्यंजन है।
'ख' विभागके शब्दोंमें इन व्यंजनोंके बदले अनुस्वार है। इन व्यंजनोंका और अनुस्वारका उच्चारण अनुनासिक है। ङ, ञ, ण, न, म, और अनुस्वारका अनुनासिक उच्चारण है।

(४) ये शब्द पढ़िए—

(क) संयम, संवाद

(ख) अंश, संसार

(क) विभागके शब्दके अनुस्वार और (ख) विभागके शब्दके अनुस्वारके उच्चारणमें अन्तर है।
हिन्दीमें अनुस्वारके उच्चारणके कई भेद हैं।

(५) ये शब्द पढ़िए—

माँ, हूँ, हँसना

इन शब्दोंमें चन्द्रबिन्दु ‘ँ’ है। अनुस्वारकी अपेक्षा इसका उच्चारण हलका है। इसको अर्द्धानुस्वार कहते हैं।

(६) ये शब्द देखिए :—

नहीं, मैं, लोगोंसे इन शब्दोंके अनुस्वारका उच्चारण अर्द्धानुस्वारका-सा है; फिर भी चन्द्रबिन्दु नहीं दिया गया है। **इ, ए, ओ** आदिकी मात्राएँ अक्षरके ऊपर होनेके कारण चन्द्रबिन्दुके बदले पूर्ण बिन्दु ही लगाया जाता है।

(७) इन शब्दोंका उच्चारण कीजिए :—

अन्तःकरण, प्रायः, प्रातःकाल

विसर्गका उच्चारण ‘ह’ जैसा होता है।

(८) इन शब्दोंका उच्चारण कीजिए :—

(क) **सन्देह, बाहर, मुहर, कहानी, सही, कहीं-कहीं।**
(ख) **बहरा, बहलाना, नहर, नहलाना, गहरा, कहना, बहन।**
(ग) **जगह, वजह, ग्यारह, बारह आदि।**

(क) विभागके शब्दोंमें ‘ह’ का उच्चारण सीधा पूरा होता है। (ख) विभागके शब्दोंमें ‘ह’ के पूर्ववाले अक्षरका प्रकार कुछ-कुछ एकारके समान ध्वनित होता है। (ग) विभागके ‘ह’ का उच्चारण इतना हलका है कि पूर्वके अक्षरकी अकार-सी ध्वनि होती है।
‘ह’ के उच्चारणमें भिन्नता है।

(९) ये शब्द देखिए :—

(क) **डाक, चोरी, अण्डी, गड्डी, ढक्कन, ढाल, ढेर।**
(ख) **सड़क, घोड़ा, पहाड़ी, कपड़े, गढ़, पढ़िए, डेढ़।**

(क) विभागके शब्दोंमें 'ड' और 'ढ' का साफ-साफ दबावयुक्त उच्चारण होता है। (ख) विभागके शब्दोंमें इन्हीं अक्षरोंका उच्चारण कुछ ढीला और हलका होता है। उच्चारणका भेद सूचित करनेके लिए ड और ढ नीचे बिन्दी दी जाती है।

(१०) ये शब्द देखिए :—

(क) फन, सफल, फैलाना।

(ख) सफ़र, फ़क़ीर, अफ़ीम।

(क) वर्गके शब्दोंके 'फ' के उच्चारण और (ख) वर्गके शब्दोंके 'फ़' के उच्चारणमें अन्तर है। (ख) वर्गके 'फ़' का उच्चारण अँग्रेजी 'एफ' के समान है। उच्चारणकी यह भिन्नता सूचित करनेके लिए 'फ' के नीचे नुकता (बिन्दी) देते हैं।

(११) ये शब्द देखिए :—

(क) जब, आज

(ख) ज़बान, बाज़

(क) वर्गके 'ज' के उच्चारणमें और (ख) वर्गके 'ज़' के उच्चारणमें अन्तर है। (ख) वर्गके 'ज़' का उच्चारण अँग्रेजी 'ज़ेड' के समान है। उच्चारणकी यह भिन्नता सूचित करनेके लिए 'ज' के नीचे नुक्ता देते हैं।

अभ्यास

१. नीचे लिखे शब्दोंका उच्चारण कीजिए :—
बड़प्पन, मेंढ़क, गाड़ी, ढ़ालू, कौड़ी, बंडल, ढ़ाई, कड़ी, मुंडन, कपड़ा, डाक, ढ़ेला, जहर, सफाई।

२ नीचे लिखे अनुस्वारोंका उच्चारण कीजिए :—
चींटी, ऊँट, बातें, वहाँ, पतंग, गाँठ, हाँ, हँसी, हंस।

३ नीचे लिखे शब्दोंका ठीक उच्चारण कीजिए :—
मोर, मौसम, नैतिक, पेड़, पैदल, बल, भौतिक, में, मैं, सोना, सौ, गोर, गौर।

४ विसर्गका उच्चारण कैसा होता है—उदाहरणके साथ बताइए।

पाठ : ४

शब्द-विचार

शब्दोंके भेद

१. ये शब्द देखिए—कागज, कलम, पुस्तक, पानी, गाय, लड़की, आदमी, मोहन, सुहासिनी, बिल्ली, मुस्कुराहट, बचपन, कोमलता।

इनमें कागज, कलम, पुस्तक, पानी—ये शब्द उन-उन पदार्थोंके नाम हैं। गाय, लड़की, आदमी, मोहन, सुहासिनी, बिल्ली—ये शब्द उन-उन प्राणियोंके नाम हैं। मुस्कुराहट, बचपन, कोमलता—ये शब्द लक्षणोंके नाम हैं।

व्याकरणमें पदार्थ, प्राणी या लक्षणका नाम सूचित करनेवाला शब्द '**संज्ञा**' कहलाता है।

२. ये वाक्य पढ़िए—

पिताजी, हिन्दीकी पुस्तक मेजपर है। आप उसे पढ़िए।

पहले वाक्यमें '**पिताजी**', '**हिन्दी**', '**पुस्तक**' और '**मेज**' संज्ञाएँ हैं। दूसरे वाक्यमें '**आप**' शब्द '**पिताजी**' के लिए—संज्ञाके स्थान पर आया है। '**उसे**' शब्द '**पुस्तक**' के स्थानपर अर्थात संज्ञाके स्थान पर आया है।

संज्ञा के शब्द के जिस शब्द का उपयोग होता है, उसे '**सर्वनाम**' कहते हैं।

३. ये शब्द-समूह देखिए—

मेहनती आदमी; नटखट लड़का; दस पुस्तकें; सफेद कागज।

इनमें आदमी, लड़का, पुस्तकें और कागज—ये शब्द संज्ञाएँ हैं और इन संज्ञाओंकी क्रमशः मेहनती, नटखट, दस और सफेद—ये शब्द विशेषता बताते हैं।

संज्ञाकी विशेषता बतानेवाले शब्दको '**विशेषण**' कहते हैं।

४. ये वाक्य पढ़िए--

मैंने काम किया; आपके पास पुस्तक है; पानी बरसेगा; आपका काम अभी पूरा नहीं हुआ।--इन वाक्योंमें क्रमशः '**किया**', '**है**', '**बरसेगा**' और '**हुआ**' ये शब्द संज्ञाके कार्य का या स्थितिका भाव प्रकट करते हैं।

जो शब्द संज्ञाकी स्थिति या कार्य सम्बन्धी भाव प्रकट करता है, या विधान करता है, उसे '**क्रिया**' कहते हैं।

५. ये वाक्य पढ़िए--

वहाँ बैठो; मैं अभी जाऊँगा; आप धीरे-धीरे चलिए; वह अचानक गिर पड़ा।

इनमें 'बैठो', 'जाऊँगा', 'चलिए' और 'गिर पड़ा' क्रियाएँ हैं और क्रमशः **वहाँ, अभी, धीरे-धीरे** और **अचानक** शब्द उन क्रियाओंकी विशेषता बताते हैं। ये **क्रिया-विशेषण** कहलाते हैं।

जो शब्द क्रिया की विशेषता बताता है, उसे **क्रिया-विशेषण** कहते हैं।

६. ये वाक्य पढ़िए--

कुटीके सामने बगीचा है। उसके लिए यत्न करना चाहिए। गाँवके बाहर तालाब था। राम के साथ सीता और लक्ष्मण भी थे। हमें आपकी वजहसे कष्ट उठाना पड़ा।

इनमें पहले वाक्यमें '**कुटी**' और '**बगीचे**' के सम्बन्धका बोध '**के सामने**' से; दूसरे वाक्यमें '**उस**' और '**यत्न**' के सम्बन्धका बोध '**के लिए**' से; तीसरे वाक्यमें '**राम**' और '**सीता और लक्ष्मण**' के सम्बन्धका बोध '**के साथ**' से और चौथे वाक्यमें '**आप और कष्ट**' के सम्बन्धका बोध '**की वजहसे**' होता है। इन वाक्योंमें '**के सामने**', '**के लिए**', '**के साथ**' और '**की वजहसे**' संज्ञाओं या संज्ञा और सर्वनाम के बीचके सम्बन्धका बोध कराते हैं। ये शब्द सम्बन्ध-सूचक हैं।

जो शब्द एक संज्ञा या सर्वनामका क्रिया या दूसरे शब्द-भेदके साथ सम्बन्ध सूचित करता है, वह '**सम्बन्ध-वाचक**' कहलाता है।

७. ये वाक्य पढ़िए—

मेजपर कागज, कलम और दावात है। मुझे कहानी-संग्रह या उपन्यास दीजिए। तुम जल्दी आओ, नहीं तो गाड़ी छूट जाएगी।

पहले वाक्यमें '**कलम**' और '**दावात**' के समुच्चयका बोध '**और**' से होता है; दूसरेमें '**कहानी-संग्रह**' और '**उपन्यास**' शब्दोंको '**या**' मिलाता है; तीसरे वाक्यमें '**तुम जल्दी आओ**' और '**गाड़ी छूट जाएगी**' इन दो वाक्योंको '**नहीं तो**' मिलाता है। ये मिलानेवाले या समुच्चय सूचित करनेवाले शब्द **समुच्चय बोधक** कहलाते हैं।

जो अव्यय (क्रिया की विशेषता न बताकर) एक वाक्यका सम्बन्ध दूसरे वाक्यसे मिलाता है, उसे **समुच्चय बोधक** कहते हैं।

८. ये वाक्य पढ़िए :—

वाह-वाह! कितना अच्छा गाता है। शाबाश! तुमने कमाल कर दिया। अरे रे! बच्चा गिर रहा है। हाय-हाय! मेरा घर उजड़ गया।

इनमें '**वाह-वाह**', '**शाबाश**', '**अरे रे**' और '**हाय-हाय**' से मनकी दशाका बोध होता है। '**वाह-वाह**' और '**शाबाश**' आनन्द और आश्चर्यका बोध कराते हैं। '**अरे रे**' चिन्ताका बोध कराता है और '**हाय-हाय**' दुखका।

जो शब्द हर्ष, शोक, विस्मय आदि भावोंको सूचित करता है, उसे '**विस्मयादि बोधक**' कहते हैं।

९. इन शब्द-समूहोंपर ध्यान दीजिए :—

लड़का-लड़कोंको; मैं-मुझको; काला-काली गाय; आता है-आते हैं।

इनमें '**लड़का**' शब्दका रूप विकृत होकर '**लड़कों**' हो गया है। '**मैं**' विकृत होकर '**मुझ**' हो गया है। '**काला**' विकृत होकर '**काली**' हो गया है। '**आता है**'–**आते हैं**' हो गया है। ये क्रमशः संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया हैं। ये **विकारी शब्द** कहलाते हैं।

जो शब्द लिंग, वचन, काल या कारक के कारण विकृत हो जाता है उसे **विकारी शब्द** कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया विकारी हैं।

१०. इन वाक्योंको पढ़िए :—

मैं कल आया ; तुम यहाँ बैठो ; मेजके नीचे क्या है ; **तुम** जाओ और काम करो ; हाय-हाय ! मैं अनाथ हो गया ।

इन वाक्योंमें '**कल**' और '**यहाँ**' क्रिया-विशेषण हैं तथा '**के नीचे**' '**और**' व '**हाय-हाय**' क्रमशः सम्बन्ध-वाचक, समुच्चय-बोधक और विस्मयादि-बोधक है। इन शब्दोंका किसी कारणसे रूपान्तर नहीं हो सकता। ये शब्द '**अविकारी**' या '**अव्यय**' कहलाते हैं।

जिस शब्दका किसी भी कारणसे रूपान्तर नहीं हो सकता है, उसे '**अविकारी**' अथवा '**अव्यय**' कहते **हैं**। क्रिया-विशेषण, सम्बन्ध-सूचक समुच्चय-बोधक और विस्मयादि-बोधक अव्यय हैं।

अभ्यास

१. **सर्वनाम किसे कहते हैं ?**

२. क्रिया-विशेषण किसे कहते हैं ?

३. नीचे दिए हुए वाक्योंमेंसे संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियाओं को बताइए :—

राम एक गरीब बालक है। वह नागपुरमें रहता है। उसके पिताजी वहाँ काम करते हैं। उसे तुम यहाँ बुलाओ।

४. नीचे दिए हुए वाक्योंमेंसे क्रिया-विशेषण, सम्बन्धवाचक, समुच्चय-बोधक और विस्मयादि-बोधकको बताइए :—

अरे ! तुम कब आए ? मैंने सोचा कि तुम एक मासके बाद आओगे। आनेके पहले तुमने पत्र क्यों नहीं लिखा ? अब यहाँ आराम करो। कल मैं तुमको वहाँ ले जाऊँगा। अब तुम जाओ और कपड़े बदलो।

पाठ : ५

संज्ञाके भेद

१. रामकी पुस्तक मेजपर है। पुस्तककी लम्बाई मेजकी उँचाईसे कम है।

उपर्युक्त वाक्योंमें '**राम**', '**पुस्तक**', '**मेज**', '**लम्बाई**' और '**उँचाई**' संज्ञाएँ हैं।

'**राम**' एक व्यक्तिका नाम है। '**पुस्तक**' और '**मेज**' पदार्थोंके नाम हैं। 'लम्बाई' और 'उँचाई' किसी व्यक्ति या पदार्थके नाम नहीं, किसी पदार्थ (या व्यक्ति) में पाए जानेवाले धर्म या गुणके नाम हैं। '**राम**', '**पुस्तक**' और '**मेज**' पदार्थ-वाचक संज्ञाएँ हैं और '**लम्बाई** और '**उँचाई**' भाव-वाचक संज्ञाएँ हैं।

संज्ञाके दो भेद हैं—पदार्थ-वाचक संज्ञा और भाव-वाचक संज्ञा।

जिस संज्ञासे किसी प्राणी या पदार्थका अथवा उनके समूहका बोध होता है, वह **पदार्थ-वाचक संज्ञा** है।

जिस संज्ञासे किसी प्राणी या पदार्थमें पाए जानेवाले किसी धर्मका बोध होता है, वह **भाव-वाचक संज्ञा** है।

१. कलकत्ता बहुत बड़ा नगर है।

२. नदियोंमें श्रेष्ठ गंगा है।

३. पण्डित जवाहरलाल नेहरू हमारे प्रधान मन्त्री थे।

ऊपर दिए गए वाक्योंमें '**कलकत्ता**', '**नगर**', '**नदी**', '**गंगा**', '**पण्डित**', '**जवाहरलाल नेहरू**', '**मन्त्री**' ये सभी पदार्थ-वाचक संज्ञाएँ हैं।

परन्तु '**नगर**' शब्दसे जहाँ कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली आदि किसी नगरका बोध हो सकता है, वहाँ '**कलकत्ता**' शब्दसे केवल एक विशिष्ट नगरका बोध होता है। '**नदी**' शब्दसे गंगा, यमुना, नर्मदा, कावेरी आदि किसी नदीका बोध हो सकता है, पर '**गंगा**' शब्दसे केवल एक नदीका बोध होता है। '**पण्डित**' संज्ञासे किसी भी ब्राह्मण कुलमें उत्पन्न (अथवा पढ़े-

लिखे विद्वान) मनुष्यका बोध हो सकता है। पर '**जवाहरलाल नेहरू**' एक विशिष्ट व्यक्तिका नाम है। '**मन्त्री**' सरकारके निश्चित कार्य करने-वाले किसी व्यक्ति विशेषका बोध करा सकता है।

इस तरह हम देखते हैं कि नगर, नदी, पण्डित और मन्त्री भिन्न-प्रकारकी पदार्थ-वाचक संज्ञाएँ हैं तथा कलकत्ता, गंगा और जवाहरलाल नेहरू भिन्न प्रकारकी। नगर, नदी आदि जातिवाचक संज्ञाएँ हैं और कलकत्ता गंगा आदि व्यक्ति-वाचक संज्ञाएँ।

पदार्थ-वाचक संज्ञाओंके दो भेद हैं—व्यक्तिवाचक और जातिवाचक।

जिस संज्ञासे किसी विशिष्ट एक ही प्राणी या पदार्थ या उनके एक ही समूहका बोध होता है, वह **व्यक्तिवाचक** संज्ञा है।

जिस संज्ञासे किसी जातिके सम्पूर्ण प्राणी या पदार्थ अथवा उनके समूहोंका बोध होता है, वह **जातिवाचक** संज्ञा है।

इस प्रकार संज्ञाके मूलतः दो भेद हैं—पदार्थ-वाचक और भाव-वाचक; पदार्थ-वाचकके दो भेद हैं—व्यक्तिवाचक और जातिवाचक।

अभ्यास

१. संज्ञाओंके कितने भेद हैं ?

२. पदार्थ-वाचक संज्ञाके कितने भेद हैं ?

३. नीचे लिखे वाक्योंमें संज्ञाओंको बताकर उनके विभिन्न भेद बताइए :—

ग्रीष्म ऋतुमें गरमी बहुत बढ़ जाती है। तब लोग पहाड़ियोंपर जाकर रहने लगते हैं। नीलगिरि, महाबलेश्वर, मसूरी, शिमला, दार्जिलिंग आदि भारतके प्रसिद्ध पर्वत-प्रदेश हैं। वर्षा-ऋतुमें जब पानी बरसता है तब गरमी कम होती है। कुओंमें पानी भर जाता है।

प्रयाग तीर्थराज है। वहाँ गंगा और यमुनाका संगम होता है। भूतपूर्व प्रधानमंत्री, जवाहरलालका घर वहीं था। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन वहीं रहते थे। प्रति वर्ष संगमपर बड़ा मेला लगता है।

पाठ : ६

लिंग

(१) मेरा **भाई** खेलता है। **बैल** गाड़ी खींचता है। **घोड़ा** क्या करता है?

इन वाक्योंमें **भाई**, **बैल** और **घोड़ा** संज्ञाएँ हैं—ये पुरुष जातिके प्राणियोंके नाम हैं। पुरुषजाति सूचित करनेवाले नाम **पुंल्लिग** कहलाते हैं।

(२) मेरी **बहन** खेलती है। **गाय** दूध देती है। **घोड़ी** क्या करती है?

इन वाक्योंमें **बहन**, **गाय** और **घोड़ी** स्त्री जातिके प्राणियोंके नाम हैं। ये नाम **स्त्रीलिंग** कहलाते हैं।

(३) यह **घर बड़ा** है। ठंडा **पानी** लाओ। **घड़ा** टूट गया।

इन वाक्योंमें **घर**, **पानी** और **घड़ा** निर्जीव पदार्थोंके नाम हैं। ये शब्द '**पुंल्लिग**' हैं।

(४) यह **किताब** अच्छी है। **रोटी** पकी नहीं है। **कुर्सी** टूट गई।

इन वाक्योंमें 'किताब', 'रोटी' और 'कुर्सी' निर्जीव पदार्थोंके नाम हैं। ये शब्द **स्त्रीलिंग** हैं।

निर्जीव पदार्थोंमें स्त्री-पुरुष जातिका कोई अन्तर नहीं है। फिर भी हिन्दीमें निर्जीव पदार्थ-सूचक नामोंका भी **स्त्रीलिंग-पुंल्लिग** भेद माना गया है—उन नामोंका कोई अलग लिंग नहीं है।

हिन्दीमें दो ही लिंग हैं, **पुंल्लिग** और **स्त्रीलिंग**। जहाँ स्त्री-पुरुष जातिकी पहचान सम्भव है, वहाँ तो पुरुष-जाति-सूचक संज्ञाका **पुंल्लिग** और स्त्री-जाति-सूचक संज्ञाका **स्त्रीलिंग** होगा, पर निर्जीव वस्तुओंको सूचित करनेवाली संज्ञाका लिंग अभ्याससे जाना जा सकता है।

पुल्लिगसे स्त्रीलिंग बनानेके नियम

(५)

(क) विभाग	(ख) विभाग
लड़का खेलता है।	लड़की खेलती है।
घोड़ा दौड़ता है।	घोड़ी दौड़ती है।
चेला सीखता है।	चेली सीखती है।
गधा चरता है।	गधी चरती है।

ऊपर दिए हुए (क) विभागके वाक्योंमें 'लड़का', 'घोड़ा', 'चेला' और 'गधा' प्राणि-वाचक आकारान्त पुल्लिग संज्ञाएँ हैं, और (ख) विभागके वाक्योंमें 'लड़की', 'घोड़ी', 'चेली' और 'गधी' उन्हीं **पुल्लिग** संज्ञाओंके **स्त्रीलिंग** हैं। पुल्लिग संज्ञाओंके आकारान्तके बदले '**ई**' लगानेसे **स्त्रीलिंग** संज्ञाएँ बनी हैं।

प्राणिवाचक आकारान्त **पुल्लिग** संज्ञाके अन्तिम '**आ**' स्वरके बदले '**ई**' स्वर लगानेसे **स्त्रीलिंग** संज्ञा बनती है।

(६)

(क) विभाग	(ख) विभाग
सुनार गहने बनाता है।	सुनारिन गहने बनाती है।
अहीर दूध दुहता है।	अहीरिन दूध दुहती है।
धोबी कपड़े लाया।	धोबिन कपड़े लाई।
साँप काटता है।	साँपिन काटती है।

ऊपर दिए हुए (क) विभागके वाक्योंमें 'सुनार', 'अहीर', और 'धोबी' व्यवसाय-सूचक पुल्लिग संज्ञाएँ हैं और (ख) विभागके 'सुनारिन', 'अहीरिन' और 'धोबिन' क्रमशः उन पुल्लिग संज्ञाओंके स्त्रीलिंग है। वैसे ही (क) विभागके अन्तिम वाक्यका 'साँप' एक जातिका नाम है। (ख) विभागके अन्तिम वाक्यका 'साँपिन' शब्द उसका स्त्रीलिंग है। इन वाक्योंमें पुल्लिग शब्दोंके अन्तिम स्वरके बदले '**इन**' लगानेसे स्त्रीलिंग शब्द बने हैं।

कुछ व्यवसाय-वाचक संज्ञाओं और कुछ जीव-जन्तु सूचक संज्ञाओंके अन्तिम स्वरके बदले '**इन**' लगानेसे पुल्लिग शब्द स्त्रीलिंग हो जाता है।

(७) (क) **विभाग**

मोर नाचता है।
सिंह गरजता है।
ऊँट जाता है।
भील आता है।

(ख) **विभाग**

मोरनी खड़ी है।
सिंहनी गरजती है।
ऊँटनी जाती है।
भीलनी आती है।

ऊपरके वाक्योंमें मोर, सिंह, ऊँट, भील---इन पुल्लिग शब्दोंमें 'नी' प्रत्यय लगानेसे स्त्रीलिंग बने।

कई पुल्लिग संज्ञाओंमें '**नी**' प्रत्यय लगानेसे स्त्रीलिंग संज्ञा बनती है।

(८) **क** विभाग---ठाकुर--ठकुराइन; बनिया--बनियाइन; मिसिर--मिसिराइन।

ख विभाग---सेठ--सेठानी; जेठ-जेठानी; देवर--देवरानी; चौधरी--चौधरानी।

ऊपर पुल्लिग और स्त्रीलिंग शब्दोंके जोड़े दिए गए हैं। **क** विभागके वाक्योंके साथ '**आइन**' प्रत्यय और **ख** विभाग के वाक्योंमें संज्ञाके साथ '**आनी**' प्रत्यय लगाया गया है।

(९) कुछ पुल्लिग संज्ञाओंमें '**इया**' प्रत्यय लगाने पर स्त्रीलिंग हो जाता है---

कुत्ता--कुतिया; बेटा--बिटिया; बुड्ढा--बुढ़िया आदि।

(१०) कुछ पुल्लिग शब्दोंके स्त्रीलिंग बननेमें कोई नियम नहीं रहता---
राजा--रानी; पुरुष--स्त्री; नर--मादी; आदमी--औरत; बैल--गाय।

(११) ऊपर बताया गया है कि पुल्लिग शब्दोंमें प्रत्यय लगानेसे स्त्रीलिंग बनते हैं। कुछ ऐसे शब्द हैं जो स्त्रीलिंग हैं और प्रत्यय लगानेसे पुल्लिंग बनते हैं :—

भैंस–भैंसा; भेड़–भेड़ा; ननद–ननदोई; जीजी–जीजा।

अभ्यास

१. हिन्दीमें कितने लिंग हैं।

२. लिंग पहचानकर वाक्योंमें प्रयोग कीजिए :—

आदमी; हवा; कपड़ा; दवा; पुस्तक; गाय; घर; मकान; सड़क; घी; भैंस; बुढ़िया; भेड़िया; भेड़; बकरा।

३. लिंग बदलिए :—

बेटा; चाचा; भाई; पुत्र; ससुर; गाय; भैंसा; चूहा; ठाकुर; राजा; सुनार; बाघ; मोर; नाई।

पाठ : ७

वचन

(१) (क) विभाग — (ख) विभाग

(क) विभाग	(ख) विभाग
लड़का खेलता है।	**लड़के** खेलते हैं।
यह **घर** बड़ा है।	ये **घर** बड़े हैं।
एक **किताब** लाओ।	दो **किताबें** लाओ।
एक **लड़की** पढ़ती है।	कई **लड़कियाँ** पढ़ती हैं।

(क) वर्गमें '**लड़का**', '**घर**', '**किताब**', '**लड़की**' संज्ञाएँ एक वस्तुका बोध कराती हैं। और (ख) वर्गके '**लड़के**', '**घर**', '**किताबें**' और '**लड़कियाँ**' एकसे अधिक वस्तुओंका बोध कराती हैं। (क) वर्गकी संज्ञाएँ एकवचन हैं और (ख) वर्गकी संज्ञाएँ बहुवचन।

हिन्दीमें दो वचन हैं—एकवचन और बहुवचन। जिस रूपसे एक ही वस्तुका बोध होता है, उसे **एकवचन** कहते हैं, और **जिससे एकसे** अधिक वस्तुओंका बोध होता है, उसे **बहुवचन** कहते हैं।

आदरके लिए बहुवचनका प्रयोग होता है।

(२) **क** भारत हमारा **देश** है।
एक **आदमी** आ रहा है।
डाकू माल लूटता है।

ख फ्रांस, जर्मनी, रूस आदि यूरोपके प्रमुख **देश** हैं।
यहाँ कई **आदमी** काम करते हैं।
डाकू माल लूटते हैं।

ऊपरके वाक्योंमें **क** विभागमें 'देश', 'आदमी', और 'डाकू' पुल्लिग-एकवचन हैं; **ख** विभागमें ये ही तीनों शब्द बहुवचन हैं। हिन्दीमें बहुधा **पुल्लिग शब्दोंका** बहुवचनमें कोई रूपान्तर नहीं होता।

(३) क–लड़का खेलता है। घोड़ा दौड़ता है। पत्ता उड़ता है।

ख–लड़के खेलते हैं। घोड़े दौड़ते हैं। पत्ते उड़ते हैं।

ऊपरके वाक्योंमें (क) विभागमें 'लड़का', 'घोड़ा' और 'पत्ता' पुल्लिग एकवचन हैं और (ख) विभागमें 'लड़के', 'घोड़े' और 'पत्ते' बहुवचन हैं।

हिन्दीमें आकारान्त पुल्लिग शब्द बहुधा बहुवचनमें एकारान्त हो जाते हैं।

(४) क–यह **सड़क** अच्छी है। यहाँ एक **किताब** है। **गाय** चरती है।

ख–ये **सड़कें** अच्छी हैं। यहाँ कई **किताबें** हैं। **गाएँ** चरती हैं।

ऊपरके वाक्योंमें (क) विभागमें 'सड़क', 'किताब' और 'गाय' अकारान्त स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञाएँ हैं; (ख) विभागमें 'सड़कें', 'किताबें' और 'गाएँ' बहुवचन हैं।

अकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओंके बहुवचन अन्त्य '**अ**' के स्थानपर '**एँ**' लगाया जाता है।

(५) रीति–रीतियाँ; रानी–रानियाँ; लड़की–लड़कियाँ; गाड़ी–गाड़ियाँ।

ऊपर इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओंके एकवचन और बहुवचन दिए गए हैं। हम देखते हैं कि बहुतवचनमें '**याँ**' जोड़ा गया है और अन्तका ईकार इकार कर दिया गया है।

इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाके बहुवचनमें '**याँ**' प्रत्यय जोड़ा जाता है और अन्तका ईकार इकार कर दिया जाता है।

(६) क–वह एक **माला** है। यह **दवा** है। वह मेरी **बहू** है। वह **वस्तु** अच्छी है। वह **गौ** मेरी है।

ख–वे **मालाएँ** हैं। ये **दवाएँ** हैं। वे मेरी **बहुएँ** हैं। वे **वस्तुएँ** अच्छी हैं। वे **गौएँ** मेरी हैं।

ऊपरके वाक्योंमें क विभागमें 'माला', 'दवा', 'बहू', 'वस्तु' और 'गौ' स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञाएँ हैं; ख विभागमें 'मालाएँ', 'दवाएँ', 'बहुएँ', 'वस्तुएँ' और 'गौएँ' बहुवचन हैं। हम देखते हैं कि बहुवचनमें 'एँ' प्रत्यय लगाया गया है और 'बहू' का दीर्घ ऊ ह्रस्व हो गया है।

ऊपर क्रमांक (४) और (५) में बनाई संज्ञाओंको छोड़कर अन्य स्त्रीलिंग संज्ञाके बहुवचनमें 'एँ' प्रत्यय जोड़ा जाता है; ऊकारान्त शब्दका दीर्घ ऊ ह्रस्व कर दिया जाता है।

अभ्यास

(१) हिन्दीमें कितने वचन हैं?

(२) बहुवचन किसे कहते हैं?

(३) इन संज्ञाओंके बहुवचन बनाइए :—
हाथी, माला, आदमी, पत्ती, आँख, घर, गुरु, लू, रात, भूत।

पाठ : ८

विभक्तियाँ

१. राम रावण मारता है।

इस वाक्यसे यह साफ मालूम नहीं पड़ता कि मारनेवाला राम है, या रावण। इस बातको स्पष्ट करनेके लिए एक विशेष प्रत्यय लगानेकी आवश्यकता है। यदि 'रावण' के साथ 'को' जोड़ दें तो अर्थ साफ हो जाता है कि मारनेवाला राम है और मार खानेवाला रावण। वैसे ही 'किताब मेज है'। इस वाक्यका पूरा आशय समझमें नहीं आता। पर जब 'मेज' के साथ 'में' प्रत्यय लगाते हैं तो साफ मालूम हो जाता है कि किताब कहाँ है।

इन प्रत्ययोंसे मालूम हो जाता है कि शब्दोंका क्रियासे क्या सम्बन्ध है।

एक और उदाहरण लीजिए—"राम लक्ष्मण भाई हैं" यहाँ भी आशय साफ प्रकट नहीं है। पर 'लक्ष्मण' के साथ 'का' लगा देनेसे राम और लक्ष्मणका क्या सम्बन्ध है, यह स्पष्ट मालूम हो जाता है।

संज्ञाका किसी दूसरे शब्दके साथ अथवा क्रियाके साथ सम्बन्ध सूचित करनेके लिए कुछ विशेष 'प्रत्यय' लगाने पड़ते हैं। ये कारक-चिह्न हैं—इनको 'विभक्ति' कहते हैं। कारक-चिह्न युक्त संज्ञाको '**कारक**' कहते हैं।

२. राम ने **रावण को** मारा।
मैं **कलम से** लिखता हूँ।
यह खिलौना **बच्चेके लिए** लिए है।
गंगा **हिमालय से** निकलती है।
गंगा सिंधु **नदी से** छोटी है।
राम **दशरथ का** पुत्र है।
दवात में स्याही है।

ऊपरके वाक्योंमें 'रावण को' से विदित होता है कि 'मारा' क्रियाका फल किसपर पड़ा--अर्थात् 'रावण को' वाक्यका कर्म है। दूसरे वाक्यमें 'कलमसे' सूचित होता है कि 'लिखता हूँ' क्रियाका साधन क्या है। तीसरे वाक्यमें 'बच्चेके लिए' से उद्देश्यका बोध होता है। चौथे और पाँचवें वाक्योंमें 'से' चिह्नसे उत्पत्ति-स्थान और तुलनाका बोध होता है। छठे वाक्यमें 'का' से मालूम पड़ता है कि राम और दशरथ के बीचका क्या सम्बन्ध है। सातवें वाक्योंमें 'म' से मालूम पड़ता है कि 'है' क्रियाका आधार क्या है।

इन वाक्योंमें विभिन्न कारक-चिह्नोंका प्रयोग हुआ है। इन चिह्नोंको 'विभक्ति' कहते हैं।

हिन्दीके कारक आठ हैं:—

(१) **कर्तृ कारक**—इससे कर्ताका बोध होता है। बहुधा कर्ता कारक चिह्न-विहीन होता है; यथा—राम मारता है; राम मारने लगेगा; राम मारने लगा—आदि।

कुछ विशेष संदर्भोंमें कर्ताके साथ कुछ विशेष प्रत्यय लगानेकी आवश्यकता पड़ती है।

(२) **कर्म कारक**—इससे कर्मका बोध होता है। इस कारक का चिह्न '**को**' है। बहुधा (विशेष रूपसे महत्वहीन पदार्थ वाचक संज्ञाओंके साथ) यह चिह्न लुप्त रहता है, जैसे—राम **रावण को** मारता है; राम मक्खी मारता है।

(३) **करण कारक**—इससे क्रियाके साधनका बोध होता है। इसका चिह्न 'से' है।

(४) **सम्प्रदान कारक**—इससे उद्देश्यका बोध होता है। इसका चिह्न '**को**' अथवा '**के लिए**' है।

(५) **अपादान कारक**—इससे विच्छिन्नताका अथवा तुलनाका बोध होता है। इसका चिह्न '**से**' है।

(६) **सम्बन्ध कारक**—इससे एक वस्तु या प्राणीका दूसरी वस्तु याँ प्राणीपर स्वामित्व या अधिकारका बोध होता है। इसका चिह्न

‘**का**’ है। यह ‘**का**’ सम्बन्धित शब्दके लिंग, वचन और कारकके कारण ‘**के**’ या ‘**की**’ हो जाता है।

(७) **अधिकरण कारक**—इससे क्रियाके आधारका बोध होता है। इसके चिह्न ‘**में**’ और ‘**पर**’ है।

(८) **सम्बोधन कारक**—इससे किसीको पुकारनेका बोध होता है। इस कारककी कोई विभक्ति नहीं है। संज्ञाके पूर्व ‘**हे**’ ‘**अरे**’ ‘**अजी**’ आदि पुकारनेमें उपयुक्त अव्यय लगाए जाते हैं।

३. रामको बुलाओ। हाथीके लिए ईख लाओ। लेखनीसे लिखो। गुरुका घर कहाँ है? बहूसे बहन बोलती है।

ऊपर दिए हुए वाक्योंमें एकवचन संज्ञाओंके साथ कारक-चिह्न जोड़े गए हैं। इनमें हम देखते हैं कि संज्ञाका कोई रूपान्तर नहीं हुआ।

संज्ञाके साथ कारक-चिह्न लगानेपर एकवचनमें संज्ञाका कोई रूपान्तर नहीं होता। संज्ञाके साथ कारक-चिह्न वैसे ही जोड़ा जाता है। परन्तु इस नियमका एक अपवाद भी है।

४. **क**—लड़केको बुलाओ; पत्तेपर लिखो; घोड़ेका चारा लाओ।
ख—वक्ताको बुलाओ; चाचाका नाम क्या है; नेतासे बोलो।

ऊपर क वर्गके वाक्योंमें आकारान्त पुल्लिग ‘लड़का’, ‘पत्ता’ और ‘घोड़ा’ क्रमशः ‘लड़के’, ‘पत्ते’ और ‘घोड़े’ बन गए हैं, पर ख वर्गमें आकारान्त पुल्लिग संज्ञाओंका कोई रूपान्तर नहीं हुआ है।

‘**वचन**’ वाले पाठमें बताया गया है कि आकारान्त पुल्लिग शब्द बहुधा बहुवचनमें एकारान्त हो जाते हैं। लड़का, पत्ता, घोड़ा आदि आकारान्त पुल्लिग शब्द बहुवचनमें एकारान्त हो जाते हैं। पर वक्ता, काका, नेता आदि वैसे नहीं होते।

जो पुल्लिग आकारान्त संज्ञा बहुवचनमें एकारान्त हो जाती है, वह (कारक-चिह्न) विभक्तियुक्त होनेपर एकवचनमें भी एकारान्त हो जाती है। अन्य किसी संज्ञाका रूप एकवचनमें विभक्तियुक्त होनेपर नहीं बदलता।

४. **क**–सब देशोंमें अशान्ति फैली है; किताबोंको सम्भालकर रखो; लड़कोंको बुलाओ; घोड़ोंके कानोंसे गधोंके कान लम्बे होते हैं। उन घरोंको देखो; सड़कोंको साफ रखो।

ख–सभी आदमियोंका समान अधिकार है। लड़कियोंकी बातें सुनो। मुनियोंका तप पूरा हुआ। साथियोंके साथ खेलो। रानियोंको देखो।

ग–दवाओंसे कोई लाभ नहीं हुआ। पाठशालाओंकी छुट्टी शुरू होगी। वक्ताओंका आदर किया गया। गुरुओंसे शिक्षा पाई। वस्तुओंका उपयोग करो। गौओंकी पूजा होती हैं।

ऊपर **क**–विभागके वाक्योंमें अकारान्त और कुछ आकारान्त बहुवचन संज्ञाएँ विभक्ति-युक्त हैं। आकारान्त संज्ञाएँ वे पुल्लिग संज्ञाएँ हैं, जो बहु–वचनमें एकारान्त हो जाती हैं। कारक-चिह्न लगानेपर—विभक्ति-युक्त होनेपर बहुवचनमें इन संज्ञाओंके अन्तिम स्वरके स्थानपर '**ओं**' लगाया जाता है।

ख–विभागके वाक्योंमें इकारान्त या ईकारान्त बहुवचन **संज्ञाएँ** विभक्ति–युक्त हैं। संज्ञाएँ स्त्रीलिंग भी हैं और पुल्लिग भी। इन संज्ञाओंके साथ बहुवचनमें विभक्ति-युक्त होनेपर '**यों**' लगाया जाता है और संज्ञाका ईकारान्त **इकारान्त** हो जाता है।

ग–विभागके वाक्योंमें आकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त, औकारान्त संज्ञाएँ बहुवचनमें विभक्ति-युक्त हैं। इनमें संज्ञाके अन्तमें '**ओं**' अलग जोड़ा गया है। ऊकारान्त संज्ञा **उकारान्त** हो जाती है।

कारक-चिह्न लगानेपर संज्ञाओंका बहुवचनमें निम्नलिखित रीतिसे रूपान्तर होता है :—

अ–अकारान्त **संज्ञाओं** तथा विभक्ति-रहित बहुवचनमें **एकारान्त** बननेवाले पुल्लिग आकारान्त संज्ञाओंके अन्तिम स्वरके स्थानपर विभक्ति-युक्त होनेपर बहुवचनमें '**ओं**' लगाया जाता है।

ब—इकारान्त और ईकारान्त संज्ञाओंके साथ विभक्ति-युक्त होनेपर बहुवचनमें '**यों**' लगाया जाता है। ईकारान्त संज्ञा **इकारान्त** हो जाती है।

स—अन्य संज्ञाओंके साथ विभक्ति-युक्त होनेपर बहुवचनमें '**ओं**' लगाया जाता है। यदि संज्ञा ऊकारान्त हो, तो वह **उकारान्त** हो जाती है।

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्योंमें खाली जगहोंमें उपयुक्त कारक-चिह्न लगाइए—

हम नदी—नहाने जाते हैं। हम नदी—नहाकर वापस आते हैं। नदी—पानी अच्छा है। तुम कलम—लिखो। राम—तुम क्या लाए हो? राम—बहन कहाँ रहती है। इस पुस्तक—कई चित्र हैं। पुस्तक मेज—है। गंगा हिमालय—निकलती है। गंगा—यमुना बड़ी है।

२. नीचे लिखे वाक्योंके **मोटे छपे** शब्दोंके एकवचन बनाइए—

लड़कों को देखो। **गायों** की पूजा होती है। **वस्तुओं** को सम्भालकर रखो। **भाइयों** को बुलाओ। नदियों से बड़ा लाभ है। **दवाओंसे** कोई लाभ नहीं हुआ। **पाठशालाओं** में खेलनेका प्रबन्ध नहीं है। पत्तों को फेंक दो। **आँखों** में दर्द है। **गुरुओं** का आदर करो।

पाठ : ९

सर्वनाम

१. (क) **राम** मेरा मित्र है। रामका घर रामनगरमें है। **राम** समितिमें काम करता है। **राम**का भाई काशी विद्यापीठमें पढ़ता है।

इन वाक्योंमें '**राम**' शब्द बार-बार आया है, जो सुननेमें अच्छा नहीं लगता।

(ख) राम मेरा मित्र है। उसका घर रामनगरमें है। वह समितिमें काम करता है। उसका भाई काशी विद्यापीठमें पढ़ता है।

ख-विभागके वाक्योंका आशय **क** विभागके वाक्योंके आशयके समान ही है और ये वाक्य सुननेमें भी अच्छे लगते हैं। इन वाक्योंमें 'उसका' और '**वह**', 'रामका' और 'रामके' अर्थमें आए हैं। 'राम' संज्ञा है। 'उसका' और '**वह**' **सर्वनाम** हैं, जो रामके लिए प्रयुक्त हुए हैं।

संज्ञाके बदले प्रयुक्त होनेवाला शब्द **सर्वनाम** है।

२. मैं **लिखता** हूँ। तू पढ़। चिट्ठी तैयार है, यह तू ले जा।

ऊपरके पहले वाक्य**में** लेखक स्वयं अपने बारेमें कहता है। दूसरे वाक्यमें समक्ष रहनेवालेको कुछ आदेश देता है। तीसरे वाक्यमें भी समक्ष रहनेवालेको ही कुछ आदेश देता है, किन्तु वह आदेश चिट्ठीके सम्बन्धमें है।

पहले वाक्यमें लेखकके नामके बदले '**मैं**' सर्वनाम आया है। यह उत्तम पुरुष है।

दूसरे वाक्यमें 'तू' सुननेवालेके नामके बदले आया—यह मध्यम पुरुष है। तीसरे वाक्यमें 'यह', 'चिट्ठी' संज्ञाके बदले आया है। यह अन्य पुरुष है।

हिन्दीमें तीन सर्वनाम हैं:—

उत्तम पुरुष	**मध्यम पुरुष**	**अन्य पुरुष**
मैं	तू	वह और यह

'वह' से दूरकी संज्ञाका और 'यह' से पासकी संज्ञाका बोध होता है।

'मैं', 'तू', 'वह' और 'यह' के बहुवचनके रूप 'हम', 'तुम', 'वे' और 'ये' हैं।

ये सब पुरुष-वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

	एकवचन	**बहुवचन**
उत्तम पुरुष	मैं	हम
मध्यम पुरुष	तू	तुम
अन्य पुरुष	वह	वे
	यह	ये

३. मैं आता हूँ—मैं आती हूँ। तू बोलता है—तू बोलती है।
वे आते हैं—वे आती हैं।

ऊपर तीन जोड़े वाक्य दिए गए हैं। हर जोड़ेमें पहला अंश पुल्लिंग और दूसरा स्त्रीलिंग है।

लिंगके कारण सर्वनामोंका रूपान्तर नहीं होता। वाक्योंमें क्रियाओंके सहारे सर्वनामके लिंगका पता लगाया जा सकता है।

४. मेरा नाम राम है। मुझको एक रुपया दो। तुझसे मैं बड़ा हूँ।
तेरा नाम क्या है? उसको बुलाओ। उसका नाम गोपाल है।

ऊपरके वाक्योंमें 'मेरा', 'मुझको', 'तुझसे', 'तेरा', 'उसको' और 'उसका' कारक-चिह्न-युक्त सर्वनाम हैं।

कारक-चिह्न लगानेपर सर्वनामोंका रूपान्तर होता है।

५. 'सर्वनाम' का सम्बोधन कारक नहीं होता।

६. सर्वनामोंके विभक्ति-युक्त रूप इस प्रकार हैं:—

उत्तम पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
कर्तृ कारक	मैं, मैंने	हम, हमने
कर्म कारक	मुझको, मुझे	हमको, हमें
करण कारक	मुझसे	हमसे
सम्प्रदान कारक	मुझको, मुझे, मेरे लिए	हमको, हमें, हमारे लिए
अपादान कारक	मुझसे	हमसे
सम्बन्ध कारक	मेरा, (मेरे, मेरी)	हमारा (हमारे, हमारी)
अधिकरण कारक	मुझमें, मुझपर	हममें, हमपर

मध्यम पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
कर्तृ कारक	तू, तूने	तुम, तुमने
कर्म कारक	तुझको, तुझे	तुमको, तुम्हें
करण कारक	तुझसे	तुमसे
सम्प्रदान कारक	तुझको, तुझे, तेरे लिए	तुमको, तुम्हें, तुम्हारे लिए
अपादान कारक	तुझसे	तुमसे
सम्बन्ध कारक	तेरा (तेरे, तेरी)	तुम्हारा (तुम्हारे, तुम्हारी)
अधिकरण कारक	तुझमें, तुझपर	तुममें, तुमपर

अन्य पुरुष–वह

	एकवचन	बहुवचन
कर्तृ कारक	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म कारक	उसको, उसे	उनका, उन्हें
करण कारक	उससे	उनसे
सम्प्रदान कारक	उसको, उसे, उसके लिए	उनको, उन्हें, उनके लिए
अपादान कारक	उससे	उनसे
सम्बन्ध कारक	उसका (उसके, उसकी)	उनका (उनके, उनकी)
अधिकरण कारक	उसमें; उसपर	उनमें, उनपर

अन्य पुरुष - यह

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता कारक	यह, इसने	ये, इन्होंने
कर्म कारक	इसको, इसे	इनको, इन्हें
करण कारक	इससे	इनसे
सम्प्रदान कारक	इसको, इसे, इसके लिए	इनको, इन्हें इनके लिए
अपादान कारक	इससे	इनसे
सम्बन्ध कारक	इसका (इसके, इसकी)	इनका (इनके, इनकी)
अधिकरण कारक	इसमें, इसपर	इनमें, इनपर

अभ्यास

१. खाली जगहोंमें उचित सर्वनाम भरिए :—

—काशी जाता हूँ; —खत लिख। —कहाँ जाता है ?
—कहाँ जाते हो ? —क्या करता है ? —रहा नहीं है।
—घर जाते हैं। —यहाँ पढ़ते हैं।

२. कोष्टकमें दिए हुए सर्वनामका शुद्ध रूपमें प्रयोग कीजिए --

(हम) का देश भारत है। (मैं) को एक रुपया चाहिए। (तू) को कौन बुलाता है ? (तू) घर कहाँ है ? (वह) से मत बोलो! (वह) के लिए मैं पुस्तक लाया हूँ। (तुम) का भाई क्या करता है ? (हम) को देखो। (तुम) का घर बड़ा है। (मैं) का काम पूरा हुआ।

पाठ : १०

विशेषण

१. माधव **बड़ा** भाई है। केशव **छोटा** भाई है। यह पुस्तक **मोटी** है। **सफेद** कागज लाओ। **काला** कुत्ता भोंकता है। **फटा** कपड़ा फेंक दो। **तीन** आदमी आते हैं।

ऊपर दिए हुए वाक्योंमें 'बड़ा', 'छोटा', 'मोटी', 'सफेद' 'काला', 'फटा', और 'तीन' संज्ञाओंकी विशेषता बताते हैं।

'बड़ा भाई' कहनेसे विदित होता है कि माधव बड़ा है। यदि कहा जाए कि माधव और केशव भाई-भाई हैं, तो सन्देह रह ही जाएगा कि कौन बड़ा है और कौन छोटा! 'बड़ा' या 'छोटा' भाईकी विशेषता बताता है।

'मोटी' पुस्तककी, 'सफेद' कागजकी, 'काला' कुत्ताकी और 'फटा' कपड़ेकी विशेषता बताते हैं। 'तीन' शब्द भी आदमीकी विशेषता ही बताता है। ये सब विशेषण हैं।

संज्ञाकी विशेषता बतानेवाला शब्द **विशेषण** है।

२.	**(क) विभाग**	**(ख) विभाग**
	वह पुस्तक है।	वह पुस्तक बड़ी है।
	यह घर है।	यह घर मेरा है।
	वे लोग कौन हैं?	वे लोग मेहमान हैं।

ऊपर दिए हुए वाक्योंमें (क) विभागके वह, यह और वे सर्वनाम हैं। परन्तु (ख) विभागके वाक्योंमें ये ही शब्द सर्वनाम नहीं हैं। (क) विभागमें ये क्रमशः पुस्तक, घर और लोग संज्ञाओंके बदले प्रयुक्त हैं; परन्तु (ख) विभाग-में ये शब्द पुस्तक, घर और लोग संज्ञाओंका निर्देश करते हैं। ये विशेषण हैं। ये सार्वनामिक विशेषण हैं। यह, वह, वे, कौन, जो आदि सर्वनाम जब संज्ञाका निर्देश करते हैं, तब वे **सार्वनामिक विशेषण** बन जाते हैं।

३. विशेषण जिस संज्ञाकी विशेषता बताता है, उसे **विशेष्य** कहते हैं।

४. (क) काला घोड़ा दौड़ता है। बड़ा घर मेरा है। छोटा लड़का खेलता है। सस्ता माल खरीदो।

(ख) काले घोड़े दौड़ते हैं। बड़े घर मेरे हैं। छोटे लड़के खेलते हैं। सस्ते माल खरीदो।

(ग) काले घोड़ेपर बैठो; बड़े घरमें रहो; छोटे लड़केको खिलाओ; सस्ते मालसे काम लो।

(घ) काली गाय। बड़ी पुस्तक। छोटी लड़की। सस्ती चीज।

(क) विभागके वाक्योंमें विशेषण आकारान्त हैं। (ख) विभागकी संज्ञाएँ बहुवचन हैं और उनके विशेषण एकारान्त हो गए। (ग) विभागमें संज्ञाएँ एकवचन ही हैं; फिर भी विशेषण एकारान्त हैं। इसका कारण यह है कि संज्ञाएँ विभक्ति-युक्त हैं। (घ) विभागकी संज्ञाएँ स्त्रीलिंग हैं और उनके विशेषण ईकारान्त हैं।

इस तरह हम देखते हैं कि आकारान्त विशेषण विशेष्यके लिंग और वचनके अनुसार बदलता है।

विशेष्य यदि विभक्ति-युक्त पुल्लिंग एकवचन अथवा पुल्लिंग बहुवचन (विभक्ति-युक्त या विभक्ति-रहित) हो, तो बहुधा आकारान्त विशेषण एकारान्त हो जाते हैं। विशेष्य यदि स्त्रीलिंग (एकवचन या बहुवचन, विभक्ति-युक्त या विभक्ति-रहित) है, तो वह विशेषण ईकारान्त हो जाता है।

५. सुन्दर बालक—सुन्दर बालिका। गरम पानी—गरम रोटी। पालतू कुत्ता—पालतू कुतिया।

यहाँ दो-दो शब्दोंके जोड़े दिए गए हैं। हर जोड़ेके पहले अंशमें विशेष्य पुल्लिंग है और दूसरे अंशमें स्त्रीलिंग। फिर भी हम देखते हैं कि विशेषणका कोई रूपान्तर नहीं हुआ।

आकारान्त विशेषण और सार्वनामिक विशेषणोंको छोड़कर अन्य विशेषणोंका विशेष्यके लिए, वचन या कारकके कारण बहुधा कोई रूपान्तर नहीं होता।

६. (क) वह घर मेरा है। यह पुस्तक छोटी है। वे लोग आते हैं। कौन आदमी राम है?

(ख) उस घरमें मैं रहता हूँ। इस पुस्तकका क्या नाम है? उन लोगोंको देखो। किस आदमीका नाम राम है?

ऊपरके वाक्योंमें (क) विभागके वह, यह, वे और कौन सार्वनामिक विशेषण हैं और (ख) विभागमें वे क्रमशः उस, इस, उन और किस हो गए हैं। (ख) विभागके विशेष्य विभक्ति-युक्त हैं।

विशेष्य जब विभक्ति-युक्त होते हैं, तब वह, यह, कौन, जो आदि सार्वनामिक विशेषण एकवचनमें क्रमशः उस, इस, किस, जिस आदि तथा बहुवचनमें उन, इन, किन, जिन आदि बनते हैं।

अभ्यास

१. खाली जगहोंमें उपयुक्त विशेषण भरिए—

घोड़ा—है। गायका दूध—है। यह रोटी—है। —कुत्ता—भौंकता—है। हमारा देश—है। फूल—है। —सड़क—है। आदमी कौन है? —दूकान—पकवान।

२. त्रुटियोंको शुद्ध करके लिखिए—

वह घरमें चार कमरे हैं। वह आदमीका नाम क्या है। इस घरसे उस घर बड़ा है। तुम कौन कामपर आए हो? बड़ा भाईको बुलाओ। मैं बड़ा हूँ, बहन छोटा है।

———

पाठ : ११
क्रिया (सकर्मक और अकर्मक)

१. वह राम है। वह सोता है। अब वह जागेगा। तुम उसको देखो। मैं बुलाऊँगा।

पहले वाक्यमें '**है**' राम के अस्तित्वका बोध कराता है। दूसरे वाक्यमें '**सोता है**' '**वह**' की स्थितिका बोध कराता है। तीसरेमें '**जागेगा**' से मालूम होता है कि वह क्या करेगा। चौथे वाक्यमें '**तुम**' को कुछ काम दिया गया है। अन्तिम वाक्यमें '**मैं**' के सम्बन्धमें कुछ कहा गया है। ये सब शब्द क्रियाएँ हैं।

किसी संज्ञा या सर्वनामके विषयमें जो शब्द-भेद कुछ कहता है, उसे **क्रिया** कहते हैं।

जिस संज्ञा या सर्वनामके बारेमें क्रिया कुछ बताती है, वह उस क्रियाका कर्ता है।

२. राम यहाँ रहता है। राम यहाँ खाता है।

पहले वाक्यमें रामके बारेमें जो बताया गया है, उसके बाद उसके बारेमें पूछनेके लिए कुछ नहीं रह गया। पर दूसरे वाक्यमें जो बताया गया है, उसके बारेमें पूछनेकी गुंजाइश है। वह यहाँ क्या खाता है?—इसका जवाब मिलनेपर ही वाक्यका आशय पूरा होता है।

३. राम ने आम खाया। राम ने रावण को मारा। राम फल तोड़ता है। राम काम करता है।

ऊपर दिए गए वाक्योंमें क्रियाका फल कर्ताको छोड़कर किसी और पर पड़ता है। पहले वाक्यमें फल '**आम**' पर पड़ता है। दूसरेमें मारनेका फल '**रावण**' पर, तीसरेमें तोड़नेका फल '**फल**' पर और चौथेमें करनेका फल '**काम**' पर पड़ता है। ये '**आम**', '**रावण**', '**फल**' और '**काम**' कर्म कहलाते हैं। क्रियाका फल जिसपर पड़ता है, वह कर्म है। इन क्रियाओंसे

सूचित होनेवाले व्यापारका फल कर्तासे निकलकर किसी अन्य वस्तुपर पड़ता है। ये क्रियाएँ **सकर्मक** हैं। अन्य क्रियाएँ **अकर्मक** हैं।

क्रियाके दो भेद हैं—सकर्मक और अकर्मक।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्योंमें सकर्मक और अकर्मक क्रियाओंको बताइए :—

राम रोज यहाँ आता है। वह यहाँ गणित सीखता है। मैं उसको गणित सिखाता हूँ। यहाँ सीखनेके बाद वह कालेजमें सम्मिलित होगा। उसकी इच्छा विलायत जानेकी है। मैंने उससे कहा कि अब विलायत मत जाओ। यहीं अभ्यास करो। पर वह मेरी बात नहीं मानता। आखिर मैंने उसको विलायत जानेकी अनुमति दी। वह परसों विलायत जाएगा और दो साल बाद लौटेगा।

२. नीचे लिखे वाक्योंमें कर्म भरिए :—

मैं—करता हूँ। आप—पीते हैं। वह स्कूलमें—सीखता है। हम देश—करते हैं। मैं तुमको—दूँगा। तुम मुझे—दोगे। तुम्हारा—मैं खरीदूँगा। अब मैं—पढ़ूँगा। वह आजकल—बेंचता है। हमने—देखा।

पाठ : १२

क्रिया–आज्ञार्थ

१. इन वाक्योंको देखिए :—

वहाँ जा। उस तरफ न जाना; कहाँ जाते हो?

इन तीनों वाक्योंकी क्रिया '**जा**' से सम्बन्धित हैं। पहले वाक्यमें आदेश है। दूसरेमें भी आदेश है और तीसरेमें क्रियाके समयका बोध होता है।

पहले वाक्यमें क्रियाका मूल रूप है और दूसरे तथा तीसरेमें क्रिया के मूल रूपके साथ कुछ प्रत्यय जोड़े गए हैं।

क्रियाके मूल रूपको '**धातु**' कहते हैं। ऊपर दिए गए वाक्योंकी क्रियाएँ '**जा**' धातुसे बनी है। '**गया**' शब्द '**जा**' धातुका ही रूपान्तर है।

धातुके साथ '**ना**' जोड़नेसे क्रियाका साधारण रूप बनता है। क्रियाका साधारण रूप ही कोशोंमें दिया जाता है, धातु नहीं।

ऊपर बताए गए वाक्योंमें तीसरे वाक्यमें क्रियाके समयका बोध होता है। पहले और दूसरे वाक्यमें '**आदेश**' या '**आज्ञा**' है। दूसरे वाक्यकी क्रियाकी चर्चा बादमें की जाएगी। अभी यहाँ केवल '**आज्ञार्थ**' क्रियाकी ही चर्चा होगी।

२. तू जा। तुम जाओ। आप जाइए।

ऊपरके वाक्योंमें '**आज्ञार्थ**' क्रिया है। इन वाक्योंके कर्ता क्रमशः तू, तुम और आप हैं।

आज्ञार्थ क्रियाका कर्ता केवल मध्यम पुरुष सर्वनाम हो सकता है, अर्थात् तू, तुम या आप हो सकता है।

हम प्रायः देखते हैं कि '**तू**' सर्वनामका प्रयोग छोटे लोगोंके लिए अथवा जिनके प्रति अनादरका भाव सूचित करना हो, उनके लिए होता है; '**तुम**' अति छोटे या समवयस्क लोगोंके लिए अथवा जिनके प्रति

विशेष आदर आवश्यक नहीं है, ऐसे बड़ोंके लिए होता है और 'आप' का प्रयोग उन लोगोंके लिए होता है, जिनके प्रति आदर दिखाना आवश्यक है।

३. तू जा; तू कर; तू बैठ; तू दे; तू पी; तू ले।

इन वाक्योंमें हम देखते हैं कि क्रियाका आज्ञार्थ रूप है और सब धातु रूप हैं।

क्रियाकी धातु ही 'तू' के साथ आज्ञार्थ क्रियाके रूपमें प्रयुक्त होती है।

४. तुम देखो; तुम करो; तुम दो; तुम लो; तुम जाओ; तुम सीओ; तुम खाओ।

इन वाक्योंमें हम देखते हैं कि कर्ता '**तुम**' है और क्रियाके अन्तमें '**ओ**' है। **अकारान्त** धातुओंमें और **दे** तथा **ले** धातुओंमें '**ओ**' अन्तिम स्वरके बदले आया है और अन्य धातुओंके अन्तमें '**ओ**' जोड़ा गया है।

५. आप देखिए; आप बैठिए; आप जाइए; आप सोइए।

इन वाक्योंमें हम देखते हैं कि कर्ता '**आप**' है और आज्ञार्थ क्रियाओंके अन्तमें '**इए**' है। अकारान्त धातुओंमें अन्तिम स्वरके बदले '**इए**' जोड़ा जाता है और अन्य धातुओंमें '**इए**' अन्तमें अलग जोड़ा जाता है।

६. आप कीजिए; आप दीजिए; आप लीजिए।

इन वाक्योंमें कर्ता '**आप**' है और क्रिया आज्ञार्थ क्रिया है। इन क्रियाओंमें '**इए**' के बदले हम '**जिए**' पाते हैं। कर, दे और ले धातुओंके '**आप**' कर्ताके रूप क्रमशः कीजिए, दीजिए और लीजिए होते हैं, न कि करिए देइए, और लेइए।

अभ्यास

नीचे दिए हुए वाक्योंमें कोष्टकमें दी हुई धातुओंका आज्ञार्थ रूप लिखिए :—

तू किताब (पढ़); आप यहाँ (ठहर); तुम अब (जा); मुझे एक रुपया (दे); आप चाय (पी); तुम यह किताब (ले); आप एक काम (कर) और स्नान (कर); आप भोजन (कर)।

पाठ : १३

क्रिया–सामान्य वर्तमानकाल

१. मैं हूँ। हम हैं।
तू है। तुम हो।
वह है। यह है। वे हैं। ये हैं।

ऊपर तीनों पुरुष वाचक सर्वनामोंके साथ '**होना**' क्रियाके वर्तमान-कालके रूप आए हैं।

'**होना**' क्रियाके दो अर्थ हैं–एक स्थिति सूचक और दूसरा विकार सूचक।

स्थिति-सूचक '**होना**' के वर्तमानकालके रूप '**है**', '**हैं**', '**हूँ**', और '**हो**' हैं।

मैं के साथ '**हूँ**' और तुम के साथ '**हो**' का प्रयोग होता है। अन्यथा एकवचनमें '**है**' और बहुवचनमें '**हैं**' का प्रयोग होता है।

२. मैं जाता हूँ। हम जाते हैं।
तू जाता है। तुम जाते हो।
वह जाता है वे जाते हैं।

ऊपर तीनों पुरुष वाचक सर्वनामोंके साथ '**जाना**' क्रियाके वर्तमानकालके रूप आए हैं। इन प्रयोगोंमें हम दो बातें पाते हैं—

(अ) स्थितिसूचक '**होना**' क्रियाका वर्तमानकाल रूप सहायक क्रिया बनी है।

(ब) हर रूपमें क्रियाके धातुके साथ '**ता**' या '**ते**' जोड़ा गया है।

हिन्दीकी एक सामान्य विशेषता यह है कि बहुधा जो शब्द पुल्लिग एकवचनमें आकारान्त हैं, वे पुल्लिग बहुवचनमें एकारान्त और स्त्रीलिंग ईकारान्त बनते हैं।

ऊपरके उदाहरणमें '**जा**' धातुके साथ जो '**ता**' जोड़ा गया है, वह भी बहुवचनमें '**ते**' और स्त्रीलिंगमें '**ती**' बन जाता है।

देखिए, इस तरह :—

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
मैं जाता हूँ।	हम जाते हैं।	मैं जाती हूँ।	हम जाती हैं।
तू जाता है।	तुम जाते हो।	तू जाती है।	तुम जाती हो।
वह जाता है।	वे जाते हैं।	वह जाती है।	वे जाती हैं।

ये रूप क्रियाके सामान्य वर्तमानकालके रूप हैं।

सामान्य वर्तमानकालमें क्रियाकी धातुके साथ '**ता**' जोड़ा जाता है और उसके बाद स्थिति-सूचक '**होना**' क्रियाका वर्तमानकाल रूप सहायक क्रियाके रूपमें जोड़ा जाता है। धातुके साथ जो '**ता**' जोड़ा जाता है, वह कर्ताके पुल्लिंग बहुवचन रहनेपर '**ते**' और स्त्रीलिंग रहनेपर '**ती**' बन जाता है।

याद रहे कि विकार-सूचक '**होना**' क्रियाके सामान्य वर्तमानकाल रूपमें भी स्थिति-सूचक '**होना**' का वर्तमानकाल रूप सहायक क्रिया बनकर आता है।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्योंमें सामान्य वर्तमानकालकी क्रियाएँ भरिए—

राम (खेल)। तुम कहाँ (जा)? हम हिन्दी (सीख)। वह पानी (पी)। हम रोटी (खा)। सीता क्या (कर)? बहनें संगीत (सीख)। तुम पत्र (लिख)। हम लड़कियाँ गेंद (खेल)। तुम लड़के (दौड़)। मैं (स्त्री.)। किताब (पढ़)।

२. रिक्त स्थान भरिए—

–रोटी खाते हो। –किताब लिखता हूँ। सीता कपड़ा–है। अध्यापक पाठ–हैं। राम–क्या है? हम लोग पहाड़पर–हैं। –खेलता है। –मुझे बुलाती हो। –रोज यहाँ आती हैं। वे कहाँ–हैं; तुम तमाशा–हो। वह लड़की नदीमें–है।

३. नीचे लिखे वाक्य शुद्ध कीजिए—

सीता खेलता है। हम घर जाता है। वे कब आता है? अध्यापक पाठ पढ़ाती हैं। तू क्या करते हो? हम बोलता है। मैं जानता है। तुम झूठ बोलता है।

पाठ : १४

क्रिया-सामान्य भूतकाल

१. गोपाल आया। सीता गई। आप बैठे। तू बोला। मैं सोया।

ऊपर क्रियाएँ भूतकालकी हैं। हम देखते हैं कि (अ) जिस क्रियाकी धातु अकारान्त है, वह भूतकालमें आकारान्त हो जाती है– उठा, बैठा, लिखा, पढ़ा आदि। परन्तु '**करना**' का भूतकाल '**करा**' नहीं, '**किया**' है।

(आ) जिस क्रियाकी धातु आकारान्त, एकारान्त अथवा ईकारान्त है, उसके साथ भूतकालमें **या** जोड़ा जाता है—पाया, लाया, खेया, **सेवा**, **सोया**, बोया आदि।

परन्तु इस नियमके कुछ अपवाद हैं—'**जाना**' का भूतकाल '**जाया**' नहीं, बल्कि '**गया**' है। **लेना** और **देना**के रूप भूतकालमें '**लेया**', '**देया**' नहीं, बल्कि '**लिया**' और '**दिया**' है।

(इ) '**होना**' क्रियाका स्थितिसूचक अर्थमें भूतकाल '**था**' है और विकारसूचकके अर्थमें '**हुआ**' है।

(ई) ईकारान्त धातुमें अंतिम '**ई**' को '**इ**' करके '**या**' जोड़नेपर क्रियाका भूतकाल रूप बनता है :—सिया; पिया।

(उ) ऊकारांत धातुमें '**ऊ**' को '**उ**' बनाकर '**आ**' जोड़नेपर क्रियाका भूतकाल रूप बनता है। जैसे—छुआ।

२. राम आया। राम और लक्ष्मण आए। सीता आई।
सीता और उर्मिला आईं।

ऊपरके वाक्योंमें पुल्लिंग एकवचन, पुल्लिंग बहुवचन, स्त्रीलिंग एकवचन और स्त्रीलिंग बहुवचनके रूप दिए गए हैं। हम देखते हैं कि भूतकालिक रूपका आकारान्त पुल्लिंग बहुवचनमें एकारान्त स्त्रीलिंग एकवचनमें ईकारान्त और स्त्रीलिंग बहुवचनमें अनुस्वार-युक्त ईकारान्त बन जाता है।

३. **क**–राम बैठा। सीता बैठी। राम लाया। सीता लाई।
ख–राम ने किताब पढ़ी। सीता ने आम खाया।
लड़कोंने रोटी खाई। लड़कियोंनें तमाशा देखा।

ऊपरके वाक्योंमें हम देखते हैं कि **क** विभागके वाक्योंकी क्रियाओंके लिंग और वचन कर्ताके अनुसार हैं।

ख विभागके वाक्योंमें हम तीन बातें देखते हैं :—

(१) क्रियाओंका लिंग और वचन कर्ताके अनुसार नहीं है।

(२) कर्ताके साथ '**ने**' कारक चिह्न लगाया गया है।

(३) सभी क्रियाएँ सकर्मक हैं।

बहुधा सकर्मक भूतकालकी क्रियाओंके कर्ताके साथ '**ने**' कारक चिह्न लगाया जाता है। जब कर्ता कारक-चिह्न-युक्त रहता है, तब क्रियाके लिंग और वचन कर्ताके लिंग-वचनके अनुसार नहीं होते।

४. राम ने रोटी खाई। राम ने चार रुपए दिए। सीता ने चार आम खाए। लड़कियोंने तीन फल खाए।

इन वाक्योंमें हम देखते हैं कि सब कर्ता '**ने**' कारक चिह्न-युक्त हैं। साथ ही हम दो बातें और देखते हैं—(१) कर्म, कारक-चिह्न रहित है और (२) क्रियाके लिंग-वचन, कर्मके लिंग-वचनके अनुसार हैं।

जब किसी वाक्यमें कर्ता कारक चिह्न-युक्त रहता है; तब यदि कर्म कारक चिह्न-रहित हो, तो क्रियाका रूप कर्मके लिंग-वचनके अनुसार होता है।

५. हमने सीता को बुलाया। सीता ने राधा को मारा। उन्होंने कहा। आपने क्या किया ?

पहले दो वाक्योंमें हम देखते हैं कि कर्ता और कर्म दोनों कारक चिह्न-युक्त हैं। कर्ताके साथ '**ने**' चिह्न हैं और कर्मके साथ '**को**'। तीसरे वाक्यमें कर्ता तो '**ने**' चिह्न-युक्त है, पर कर्म-**व्यक्त** नहीं है। चौथे वाक्यमें कर्ता '**ने**' चिह्न-युक्त है और कर्मका लिंग-वचन स्पष्ट नहीं है।

जब किसी वाक्यमें कर्ता कारक चिह्न-युक्त रहता है, तब यदि कर्म कारक चिह्न-युक्त हो,अथवा स्पष्ट न हो या उसका लिंग-वचन निर्णय सुसाध्य न हो, तो क्रिया सदा पुल्लिंग एकवचन रहती है।

(६) भूतकालकी क्रियाओंके रूप नीचे दिए जाते हैं—

		पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
		(ए.व.)	(ब. व.)	(ए. व.)	(ब. व.)
अकारांत	**बोल**	बोला	बोले	बोली	बोलीं
आकारांत	**पा**	पाया	पाए	पाई	पाईं
ईकारांत	**सी**	सिया	सिए	सी	सीं
ऊकारांत	**छू**	छुआ	छुए	छुई	छुईं
एकारांत	**से**	सेया	सेए	सेई	सेईं
ओकारांत	**रो**	रोया	रोए	रोई	रोईं

		पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
	धातु	(ए.व.)	(ब.व.)	(ए.व.)	(ब.व.)
अनियमित	**कर**	किया	किए	की	कीं
	दे	दिय	दिए	दी	दीं
	ले	लिया	लिए	ली	लीं
	जा	गया	गए	गई	गईं
	हो (स्थिति-सूचक)	था	थे	थी	थीं
	हो (विकार-सूचक)	हुआ	हुए	हुई	हुईं

अभ्यास

(१) नीचे लिखे वाक्योंकी क्रियाओंको भूतकालकी क्रिया बनाइए—

राम वन जाता है। सीता भी उसके साथ जाती है। वहाँ एक हिरन आता है। सीता कहती है—नाथ, यह हिरन बड़ा सुन्दर है! राम उसको पकड़ने जाता है। हिरन उसकी पकड़में नहीं आता। राम उसपर तीर चलाता है। हिरण चिल्लाता है—"हे सीते!! हे लक्ष्मण!!" सीता यह सुनती है। वह लक्ष्मण को राम के पास भेजती है।

(२) भूल सुधारिए—

तुम कहाँ गया? सीता राम को बुलाई। अध्यापक गणित पढ़ाए। हमने देखे। आप क्या किया? मैं किताब दिया। यह चिट्ठी लिखा। बहनने एक रुपया दो। मैं रोटी खाया। आप कहाँ जाए? वे बहुत-सी पुस्तकें दिए। हम भी दो पुस्तकें दिया। तू कुछ नहीं दिया।

पाठ : १५

क्रिया–सामान्य भविष्यकाल

(१) मैं घर जाऊँगा। तुम क्या करोगे?
वह किताब लाएगा। सीता कल आएगी।
इन वाक्योंमें क्रिया भविष्यकालकी है।

(२) **क**—मैं देखूँगा। हम देखेंगे।
तू देखेगा। तुम देखोगे।
वह देखेगा। वे देखेंगे।
ख—मैं जाऊँगा। हम जाएँगे।
तू जाएगा। तुम जाओगे।
वह जाएगा। वे जाएँगे।

ऊपरके वाक्योंमें **क** विभागकी क्रियाकी धातु अकारान्त हैं और **ख** विभागकी आकारान्त। हम देखते हैं कि भविष्य कालमें धातुके साथ उत्तम पुरुष एकवचनमें '**ऊँगा**', मध्यम और अन्य पुरुष एकवचनमें '**एगा**', उत्तम और अन्य पुरुष बहुवचनमें '**एँगे**' तथा मध्यम पुरुष में '**ओगे**' जोड़ा जाता है। हम यह भी देखते हैं कि जब धातु अकारान्त होती है तब '**ऊँगा**', '**एगा**', '**एँगे**' और '**ओगे**' प्रत्यय अन्तिम स्वरके बदले जोड़े जाते हैं और आकारान्त धातुओंमें अलग जोड़े जाते हैं।

(३) **क**—मैं खेऊँगा। हम खेएँगे।
तू खेएगा। तुम खेओगे।
वह खेएगा। वे खेएँगे।
ख—मैं खाऊँगा। हम खाएँगे।
तू खोएगा। तुम खोओगे।
वह खोएगा। वे खोएँगे।

इन उदाहरणोंमें हम देखते हैं कि एकारान्त और ओकारान्त धातुओंके भविष्यकालके रूप आकारान्त धातुओंके रूपोंके समान ही होते हैं।

(४) **क**— मैं पिऊँगा। हम पिएँगे।
तू पिएगा। तुम पिओगे।
वह पिएगा। वे पिएँगे।
ख— मैं छुऊँगा। हम छुएँगे।
तू छुएगा। तुम छुओगे।
वह छुएगा। वे छुएँगे।

ऊपरके उदाहरणोंमें हम देखते हैं कि ईकारान्त और ऊकारांत धातुओंमें जब भविष्यकाल सूचक प्रत्यय जुड़ते हैं, तब उन धातुओंका **दीर्घ ई** और **ऊ** क्रमशः ह्रस्व **इ** और **उ** बन जाते हैं।

(५) मैं हूँगा। हम होंगे।
तू होगा। तुम होगे।
वह होगा। वे होंगे।

इन उदाहरणोंमें हम देखते हैं कि '**होना**' क्रियाके भविष्य कालके रूप और अन्य ओकारांत धातुओंके रूपोंके समान नहीं होते। हम यह भी देखते हैं कि '**होना**' क्रियाके स्थिति-सूचक **एवं** विकार-सूचक–दोनों अर्थोंमें भविष्यकालके रूप भिन्न नहीं, एक ही हैं।

(६) मैं दूंगा। हम देंगे।
तू देगा। तुम दोगे।
वह देगा। वे देंगे।

हम देखते हैं कि '**दे**' धातु एकारांत है, फिर भी उसका भविष्य-काल रूप—देऊँगा, देऐंगे आदि नहीं, बल्कि दूंगा, देंगे आदि हैं। '**ले**' धातुके भविष्यकालके रूप भी ऐसे ही हैं।

(७) भविष्यकाल रूपके अन्तिम '**गा**' या '**गे**' स्त्रीलिंगमें '**गी**' हो जाते हैं

सामान्य भविष्यकालके रूप नीचे दिए जाते हैं—

एकारांत धातु—दे

उत्तम पुरुष	मैं दूंगा	हम देंगे	मैं दूंगी	हम देंगी।
मध्यम पुरुष	तू देगा	तुम दोगे	तू देगी	तुम दोगी।
अन्य पुरुष	वह देगा	वे देंगे	वह देगी	वे देंगी।

एकारांत धातु—**ले**

उत्तम पुरुष	मैं लूँगी	हम लेंगे	मैं लूँगी	हम लेंगी।
मध्यम पुरुष	तू लेगा	तुम लोगे	तू लेगी	तुम लोगी।
अन्य पुरुष	वह लेगा	वे लेंगे	वह लेगी	वे लेंगी।

ओकारांत धातु—**हो** (स्थिति-सूचक और विकार-सूचक)

उत्तम पुरुष	मैं हूँगा	हम होंगे	मैं हूँगी	हम होंगी।
मध्यम पुरुष	तू होगा	तुम होगे	तू होगी	तुम होगी।
अन्य पुरुष	वह होगा	वे होंगे	वह होगी	वे होंगी।

'**तुम होगे**' या '**तुम होगी**' के स्थानपर कहीं-कहीं '**तुम होवोगे**' या '**तुम होवोगी**' प्रयोग भी पाया जाता है।

'**जाएगा**' के स्थानपर कहीं-कहीं '**जायगा**', '**जायेगा**' या '**जावेगा**' तथा '**जाएँगे**' के स्थानपर '**जायँगे**', '**जायेंगे**' या '**जावेंगे**' के प्रयोग भी पाए जाते हैं। ऐसे अन्य दीर्घ स्वरान्त धातु '**ओ**' के रूपमें भी पाए जाते हैं।

अभ्यास

(१) नीचे लिखे वाक्योंमें भविष्यकालकी क्रियाएँ भरिए—

मैं कल दिल्ली (जा)। हम दोनों राष्ट्रपति भवन (जा)। वहाँ हमारे मित्रसे (मिल)। फिर हम दोनों कुतुबमीनार देखने (चल)। सारा खर्च मैं ही (कर)। अपने मित्रको खर्च करने नहीं (दे)। मैं वहाँ से आपको एक चिट्ठी (लिख)। मुझे विश्वास है कि आप मेरी चिट्ठीके अनुसार अवश्य प्रबन्ध (कर)।

(२) त्रुटियाँ शुद्ध कीजिए—

मैं आज नहीं पढ़ेगा। सीता कही—हम कुछ नहीं करेगा। हम सोचे आप कैसे जाएँगा?

पाठ : १६

अव्यय

क्रिया-विशेषण और सम्बन्ध-सूचक

(१) घोड़ा तेज दौड़ता है। सूरज ऊपर है। हम नीचे हैं।

ऊपरके वाक्योंमें 'तेज', 'ऊपर' और 'नीचे' इन शब्दोंका लिंग या वचनके कारण कोई रूपान्तर नहीं हो सकता। ये शब्द अविकारी या अव्यय हैं।

पहले वाक्यमें 'तेज' शब्दसे दौड़नेकी रीतिका बोध होता है। 'तेज' 'दौड़' क्रियाकी विशेषता बताता है। यह क्रिया-विशेषण है।

दूसरे वाक्यसे 'ऊपर' और 'नीचे' शब्दोंसे 'है' क्रियाके स्थानका बोध होता है, ये भी क्रियाकी विशेषता बताते हैं—क्रिया-विशेषण हैं।

क्रियाकी विशेषता बतानेवाले शब्दोंको **क्रिया-विशेषण** कहते हैं। क्रिया-विशेषण अव्यय है।

(२) सूरज हमारे **ऊपर** है। हम सूरज के **नीचे** हैं।

इन वाक्योंमें 'ऊपर' और 'नीचे' क्रियाकी विशेषता नहीं बताते, बल्कि 'सूरज' और 'हम' के बीचका सम्बन्ध बताते हैं। वैसे ही 'मैं काशी तक गया' वाक्यमें 'तक' शब्द 'काशी' संज्ञाका सम्बन्ध 'गया' क्रियासे बताता है।

संज्ञा या सर्वनामका सम्बन्ध क्रिया या अन्य-अन्य शब्द-भेदके साथ सूचित करनेवाला शब्द सम्बन्ध-सूचक कहलाता है। सम्बन्ध-सूचक भी अव्यय है।

(३) क— घर **सामने** है। तुम **आगे** चलो। मैं **पास** बैठूंगा। सीता **साथ** गई।

ख— घर मैदानके **सामने** है। तुम मेरे आगे चलो। मैं तुम्हारे **पास** बैठूंगा। सीता राम के **साथ** गई।

क विभागके वाक्योंमें 'सामने', 'आगे', 'पास' और 'साथ' **क्रिया-विशेषण हैं और ख विभागमें ये ही शब्द सम्बन्ध-सूचक हैं। हम** देखते हैं कि सम्बन्ध-सूचक 'के' चिह्न-युक्त हैं। कई सम्बन्ध-सूचकोंके आगे 'के' के बदले 'को' रहता है।

निम्नलिखित अव्ययोंके पहले 'के' प्रत्यय आता है—

आगे, पीछे, नीचे, ऊपर, सामने, बाहर, अंदर, भीतर, पास, साथ, बाद, सिवा, समान, बिना, अनुसार, विरुद्ध, नजदीक, कारण आदि।

इन अव्ययोंके पूर्व 'की' प्रत्यय आता है—

तरफ, ओर, तरह, नाईं, जगह, अपेक्षा, खातिर, मार्फत, भाँति आदि।

अभ्यास

(१) नीचे लिखे वाक्योंमें उचित अव्यय भरिए—

मेरे घरके—बाग है। बैल—घोड़ा—दौड़ता है। तुम—सच बोलो। शेर—आया। डाकखाना—है। काशी—है।

(२) वाक्यमें प्रयोग कीजिए—

पास, ऊपर, नीचे, अपेक्षा, तरफ, बिना।

पाठ : १७

न, नहीं, मत का प्रयोग

(१) **क**— राम **न** आया; मैं **न** जाऊँगा।

ख— **राम** नहीं आया; मैं **नहीं** जाऊँगा।

ऊपर दिए गए वाक्य निषेध-सूचक हैं। **क** विभागके वाक्योंकी अपेक्षा ख विभागके वाक्योंमें निषेध अधिक निश्चित है।

न और **नहीं** निषेध-सूचक क्रिया-विशेषण हैं और इनमें '**न**'की अपेक्षा '**नहीं**' अधिक निश्चितता सूचित करता है।

(२) तुम **मत** जाओ; तू **मत** लिख; आप **मत** देखिए।

ऊपरके वाक्योंमें भी निषेध सूचित है। सभी वाक्योंमें आज्ञार्थ क्रिया है और निषेध-सूचक शब्द 'मत' है। '**मत**' का उपयोग केवल निषेधात्मक आज्ञामें होता है।

(३) यहाँ सप्ताहमें छह दिन पढ़ाई **होती**। रविवारको पढ़ाई नहीं **होती**। बड़े लोग कभी छोटा काम **न ीं करते**। मैं आजकल व्यायाम नहीं **करता**।

ऊपरके वाक्योंमें मोटे अक्षरोंमें छपी क्रियाएँ सामान्य वर्तमान कालकी हैं और उनमें सहायक क्रिया 'है' लुप्त है। निषेधात्मक वाक्यमें सामान्य वर्तमानकालकी सहायक क्रिया लुप्त रह सकती है।

(४) **राम** न **पढ़ता** है, न काम **करता** है। तुम न **सोते** हो, न **खाते** हो। आपने न पत्र **लिखा**, न रुपया **भेजा**। तुम न **हिलो**, न **डुलो**।

उपर्युक्त वाक्योंमें दो-दो क्रियाएँ हैं और दोनोंके साथ **निषेध-सूचक** '**न**' क्रिया-विशेषण है।

एक-से अधिक निषेधात्मक क्रियाके क्रिया-विशेषणके रूपमें '**नहीं**' या '**मत**' के स्थानपर '**न**' का ही प्रयोग होता है।

(५) **न राम** आया, **न लक्ष्मण**।

इस वाक्यमें '**न**' क्रियाकी विशेषता न बताकर '**राम**' और '**लक्ष्मण**' की विशेषता बताता है। यहाँ भी दो अलग संज्ञाओंके निषेधात्मक कार्य सूचित करनेके लिए '**न**' का प्रयोग हुआ है।

अभ्यास

खाली जगहोंमें '**न**', '**नहीं**' या '**मत**' भरिए :—

मैं आज—पढ़ूंगा। वैसे ही मैं चाहता था कि आज स्कूल—जाऊँ। अब पैरमें चोट भी लगी, अवश्य ही स्कूल—जाऊँगा। तुम बोलते—मानते हो। यहाँ—राम आया—लक्ष्मण। तुम—बोलो—अब हम—जाएँगे।

पाठ : १८

वाक्य-विश्लेषण

(१) **राम** है। **वह** अयोध्या में है। **वह** पूजा करता है।

इन वाक्योंमें पहले वाक्यमें '**राम**' के बारेमें कहना ही उद्देश्य है। **राम** उद्देश्य है। जिसके बारेमें वाक्यमें कुछ कहा जाता है, वह उद्देश्य है। वैसे ही दूसरे और तीसरे वाक्योंमें '**वह**' उद्देश्य है।

पहले वाक्यमें राम के बारेमें कहा गया है कि वह है। दूसरे वाक्यमें कहा गया है कि वह अयोध्या में है और तीसरे वाक्यमें कहा गया है कि वह पूजा करता है। इन वाक्योंमें '**है**', '**है**' और '**करता है**' विधेय है।

वाक्यमें जिसके विषयमें कहा जाता है, उसे '**उद्देश्य**' कहते हैं। उद्देश्यके विषयमें जो कुछ कहा जाता है, वह '**विधेय**' कहलाता है।

उद्देश्यको कर्ता और विधेयको क्रिया कहते हैं।

दूसरे वाक्यमें '**अयोध्या में**' से इतना मालूम पड़ता है कि '**वह**' कहाँ है। तीसरे वाक्यमें यदि केवल '**वह करता है**', कहा जाए, तो प्रश्न उठेगा कि '**वह**' क्या करता है? '**पूजा**' शब्दसे इस प्रश्नका जवाब मिलता है। '**करता है**' का फल '**पूजा**' पर पड़ता है; इसलिए वह कर्म है। कर्म भी विधेय है।

(२) निम्नलिखित वाक्योंका पृथक्करण देखिए—

राम बैठता है। वह पुस्तक लिखता है। मैं जाता हूँ। तुम क्या लाते हो। वह अयोध्या में रहता है। अध्यापकने मुझे मन्त्री नियुक्त किया।

उद्देश्य	विधेय		अन्य
कर्ता	कर्म	क्रिया	
राम		बैठता है	
वह	पुस्तक	लिखता है	
मैं		जाता हूँ	
तुम	क्या	लाते हो	
वह		रहता है	अयोध्या में
अध्यापकने	मुझे	नियुक्त किया	मन्त्री

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्योंका पृथक्करण कीजिए—

पक्षी घोंसला बनाता है। गाय चरती है। तुलसीदास ने 'रामायण' रची। किसान हल चलाता है। आप कहाँ जाते हैं? बच्चा दूध पीता है। तुम क्या देखते हो? पत्ते पेड़से गिरते हैं। लड़के दौड़े।

पाठ : १९

विराम-चिह्न

(१) राम आया उसने कहा मुझे क्यों बुलाया वाह यही बात है तब तो काम बहुत आसान है।

यहाँ हम समझ नहीं पाते हैं कि सभी शब्द मिलाकर एक पूरा वाक्य है या कई वाक्य हैं। अब इन्हीं शब्दोंको फिर देखिए :—

राम आया। उसने कहा, मुझे क्यों बुलाया ? वाह ! यही बात है ? तब तो काम बहुत आसान है।

यहाँ । , ? ! इतने प्रकारके चिह्न लगाए गए हैं। ये सब विराम-चिह्न हैं।

(२) राम आया। तब तो काम बहुत आसान है।

ये दोनों पूरे वाक्य हैं। पूरे वाक्यके बाद '।' विराम-चिह्न लगाया गया है। उसका नाम **पूर्ण-विराम** है।

(३) 'मुझे क्यों बुलाया ?' भी पूर्ण वाक्य है, पर विदित है कि बोलनेवाला इस वाक्यके द्वारा प्रश्न पूछ रहा है। इसलिए '?' चिह्न लगाया गया। यह '**प्रश्न-वाचक**' विराम-चिह्न है।

(४) 'उसने कहा' पूर्ण वाक्य नहीं है। यह अधूरा है, इसलिए ',' चिह्न लगाया गया है। यह '**अल्प-विराम**' कहलाता है।

(५) इस वाक्यमें 'वाह' शब्द आश्चर्य प्रकट करता है। आश्चर्य, क्रोध, दुःख आदि प्रकट करनेके लिए जो शब्द प्रयुक्त होता है, उसके बाद '!' चिह्न लगाया जाता है। यह '**उद्गार**' या '**आश्चर्य-वाचक**' चिह्न कहलाता है।

रिक्त स्थानोंमें उपयुक्त विराम-चिह्न लगाइए :—

आह—भारत—तेरी यह कैसी दशा है—
हमने यों ही स्वराज्य लिया—
प्रेमसे रहो—झगड़ो मत—
तुम कितने बजे आए—
तुम कितने बड़े क्यों न हो—मेरे आगे बच्चे हो—
शिव शिव—इतना असत्य—
तुम क्यों चले गए—
उसके जैसा पापी कोई नहीं—

पाठ : २०

गिनती तथा अक्षरोंमें अंक

गिनतीको शुद्ध रूपमें बोलना तथा लिखना सीख लेना आवश्यक है।

१ एक	२६ छब्बीस	५१ इक्कावन	७६ छिहत्तर
२ दो	२७ सत्ताईस	५२ बावन	७७ सतहत्तर
३ तीन	२८ अट्ठाईस	५३ तिरपन	७८ अठहत्तर
४ चार	२९ उन्तीस	५४ चौवन	७९ उन्यासी
५ पाँच	३० तीस	५५ पचपन	८० अस्सी
६ छह	३१ इकतीस	५६ छप्पन	८१ इक्यासी
७ सात	३२ बत्तीस	५७ सत्तावन	८२ बयासी
८ आठ	३३ तैंतीस	५८ अट्ठावन	८३ तिरासी
९ नौ	३४ चौंतीस	५९ उनसठ	८४ चौरासी
१० दस	३५ पैंतीस	६० साठ	८५ पच्चासी
११ ग्यारह	३६ छत्तीस	६१ इकसठ	८६ छियासी
१२ बारह	३७ सैंतीस	६२ बासठ	८७ सत्तासी
१३ तेरह	३८ अड़तीस	६३ तिरसठ	८८ अट्ठासी
१४ चौदह	३९ उन्तालीस	६४ चौसठ	८९ नवासी
१५ पन्द्रह	४० चालीस	६५ पैंसठ	९० नब्बे
१६ सोलह	४१ इकतालीस	६६ छियासठ	९१ इक्यानबे
१७ सत्रह	४२ बयालीस	६७ सडसठ	९२ बानबे
१८ अठारह	४३ तेतालीस	६८ अडसठ	९३ तिरानबे
१९ उन्नीस	४४ चवालीस	६९ उनहत्तर	९४ चौरानबे
२० बीस	४५ पैंतालीस	७० सत्तर	९५ पंचानबे
२१ इक्कीस	४६ छियालीस	७१ इकहत्तर	९६ छियानबे
२२ बाईस	४७ सैंतालीस	७२ बहत्तर	९७ सत्तानबे
२३ तेईस	४८ अड़तालीस	७३ तिहत्तर	९८ अट्ठानबे
२४ चौबीस	४९ उनचास	७४ चौहत्तर	९९ निन्यानबे
२५ पच्चीस	५० पचास	७५ पचहत्तर	१०० सौ

परिशिष्ट

जोड़नी (हिज्जे)

शब्दोंका शुद्ध लेखन

शब्दोंमें हिज्जे लिखनेमें राष्ट्रभाषा पढ़नेवाले विद्यार्थियोंकी अनगिनत भूलें होती हैं। '**ह्रस्व**', '**दीर्घ**', '**अनुस्वार**', '**हकार**' आदिकी भूलें मुख्य हैं। एक ही शब्दका कई तरहसे गलत प्रयोग भी देखा जाता है। 'बहुत' को 'बहूत', 'बहोत', 'बोत' आदि तथा 'चाहिए' को 'चाहीए', 'चाईए', 'चइए' आदि लिखना सामान्य बात है। इन भूलोंपर खास ध्यान देना चाहिए। इन भूलोंको सुधारनेका सबसे अच्छा और सफल उपाय है श्रुतलेख (डिक्टेशन)। वर्गमें या व्यक्तिगत रूपसे भी बार-बार श्रुतलेख लिखनेसे ऐसी भूलें तुरन्त विद्यार्थीको मालूम होने लगती हैं। अन्यथा विद्यार्थी समझता ही नहीं कि भूलें कहाँ हो रही हैं। जिनमें प्रायः भूलें होती हैं, ऐसे मुख्य शब्द चुन-चुनकर यहाँ दिए गए हैं। इनको ध्यानमें रखनेसे बहुत-सी भूलें सुधरने लगेंगी। जहाँ तक हो सका है, ऐसे शब्दोंका वर्गीकरण करनेकी कोशिश भी की गई है, जिससे वे तुरन्त ध्यानमें आ जाएँ।

सर्वनामके शब्द

मैं	मैंने	तू	तूने	मुझे	तुझे
हमें	तुम्हें	हमको	तुमको	हमारा	तुम्हारा
हमारे	तुम्हारे	हमारी	तुम्हारी	उन्हें	इन्हें
उन्होंने	इन्होंने	उनका	इनका	जिन्हें	जिन्होंने
जिस	जिसमें	किसका	किनका	किसकी	किन्हींकी

विशेषण

कितना	जितना	इतना	उतना	यही	वही
छठा	सभी	दूसरा	तीसरा	दूसरी	तीसरी
द्वितीय	तृतीय	तीन	नौ	तीस	बीस

क्रिया-विशेषण

यहीं	वहीं	कहीं	सर्वत्र	इधर	उधर
जिधर	किधर	शीघ्र	ठीक	सरीखा	अभी

उ और ऊ

कुसुम	पहुँच	पुकार	ऊपर	सूचना	सूची
सुमन	रुई	ऊसर	ऊँची	पुर्ण	जादूगर

ए और ऐ

पेड़	पेशा	सैकड़ा	हैरान	ऐनक	तैरना
शेर	हैं	कैद	बगैरह	बगैर	बैर
सेर	एकता	पैर	बैल	मैल	सैर
बेर	तेरह	ऐक्य	फैसला	है	तैयार
मेल	बेचैन	पैदल	पैसा	गैर	खैर

ओ और औ

शोर	त्यौहार	रौनक	सौंपना	पौधा	सौदा
शोक	चौडा	फौज	लौंग	खिलौना	बिछौना
चोट	दौलत	और	भौंह	दौड़ा	चौका
ओर	नौजवान	चौपाया	भौंरा	मौज	लौटना
लोटना	शौक	कौवा	सौगन्द	फौरन	नौ

अनुस्वार व चन्द्रबिन्दु

मैं (सर्वनाम)	में (प्रत्यय)	सरसों	नहीं	नवाँ	पाँव
किताबें	हैं (ब. व.)	लोगोंने	सिंह	आठवाँ	कुआँ
भेंट	करेंगे	विद्याएँ	मुँह	नदियाँ	पाँचवाँ
पुस्तकें	बोलेंगे	लताएँ	धुआँ	साँप	चिड़ियाँ
कुओंमें	कुएँसे	बातोंमें	हूँ	प्रतियाँ	माँग

क और ख

किस्सा	कुर्सी	वक्त	भीख	सूखा	खम्भा
तम्बाकू	पक्का	ताकत	एकाध	धोखा	तख्ता

ग और घ

घास	ग्राहक	कंघी	घण्टी	घर	गुमनाम
घी	गेहूँ	वड़ी	गुस्सा	गाँव	महँगा

ज और झ

मुझे	तुझे	झगड़ा	झोपड़ी	साँझ	झाड़
आजाद	मजा	मेज	कागज	औजार	जरूरत

त–थ, द–ध

गांधीजी	गन्दा	सादा	हथियार	हाथ	बरसात
सीधी	धन्धा	गधा	हिन्दुस्तान	लात	तटस्थ

यकार–आकार

नियत	रुपया	नियत	इसलिए	कृपया	चाहिए
रियासत	व्यवहार	रियासत	दुआ	नारियल	क्रियाएँ

शकार

शेर, शीशा, मशहूर, शक्कर, संदेशा, शाही, मशीन, कोशिश, ईश्वर,दुश्मन, विशेष, प्रशंसा, होशियार, शिकायत, विश्वास, हमेशा, देश, पेशा, शाबास, इशारा, शोर, शौकीन, शाम, शून्य, शुष्क, बादशाह, सारांश, मंशा, संशय।

षकार

धनुष, भाषा, ईर्ष्या, शिष्य, विशेषण, राष्ट्र, शीर्षक, परिशिष्ट, पृष्ठ।

इकार

सेर (वजनका), खैर, सेठ, सिर, साल, दस, सौ, सदा, सस्ता, चपरासी, साहूकार, अक्सर, सिवाय, सीखना, आसान, पैसा, सोच, नुकसान, सजा, अफसोस, मुसीबत, सस्ता, दस्ता, सिर्फ, सिक्ख (जाति), सर्दी, साग, सौदा, सादा, अफसर, स्याही, नसीब, सैकड़ा, पसन्द, हिस्सा, उस्तरा।

हकार

मेहमान, महसूल, मेहनत, चेहरा, जहर, जगह, बाहर, बहार, बहुत, पहुँचना, मुहब्बत, मुहल्ला, चाहिए, पहिया, सिपाही, महँगी, शहर, महल, कहता है, रहता है, साहब, बहन, पहला, बहाना, सुबह, लहसुन, आहिस्ता, राजसिंह, एहसान, पाहुना।

क्रियाओंके कुछ रूप (ह्रस्व-दीर्घ)

कहिए, बैठिए, छुआ, हुआ, आइए, गाइए, छुई, हुई, लीजिए, दीजिए, लो, दो, पीजिए, कीजिए, गई, आई, लिखिए, पढ़िए, सोया, सुलाया, मिलिए, मिलाइए, सीखा, सिखाया, लिया, पिया, पीसा, पिलाया, मिला, दिखा, देखा, दिखाया, मिलो, लिखो, गिरा, गिना, प्रार्थना की, साड़ी दी, सोई, सुलाई, सिया, सिलाया, बोलूंगा, कहूँगा, जाऊँगा, पाऊँगा, कहूँ, सुनूं, जाऊँ, धाऊँ, पढ़ो, लिखो।

ह्रस्व-दीर्घके कुछ अन्य शब्द

प्रतिज्ञा, इतिहास, कीमत, किताब, क्रिया, तीर्थ, आशीर्वाद, खुशी, फिर, नीछे, पिछला, क्योंकि, पूछा, कि, पिता, पीता है, मजबूत, कुली, पुलिस, शरीर, पूजा, गरीब, मजदूर, बहादुर, शुरू, जरूर, खूबसूरत, सूचना, तारीख।

ह्रस्व-दीर्घको याद रखनेके लिए नीचे कुछ शब्द-समूह दिए जाते हैं, जिन्हें आसानीसे ध्यानमें रखा जा सकता है :—

छोटापन बतानेवाले कुछ ह्रस्व शब्द—

बिन्दु, लघु, अणु, प्रिय, शिशु, कुछ, शिष्य, चिह्न।

कुछ जोरदार दीर्घ शब्द—

वीर, दूर, शूर, समूह, पूर्ण, खूब, सूर्य, दीर्घ

इसके उलटे कुछ शब्द :—(अर्थ बड़ा होनेपर भी स्वर ह्रस्व है)
अति, बहुत, बुरु, सिन्धु, अधिक, कठिन, विश्व

कुछ अन्य शब्द—

रीति, नीति, भीति, प्रीति, दीप्ति, कीर्ति। वीर, धीर, सीर, तीर, तिथि, मिति, गिरि, लिपि, विधि, चीनी, सीढ़ी, चींटी, बीती, नीची। बुरी, खूबी, सूखी, सूची, ऊँची। बिल्ली, दिल्ली, तिल्ली। बिन्दी, हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान। हीन, मीन, महीन, महीना। रहित, सहित। उत्पत्ति, विपत्ति। चिड़िया, दुनिया, बढ़िया, गुडियाँ। इसलिए, इसीलिए, किसलिए, उनके लिए। खुशबू, बदबू। चिट्ठी, मिट्टी, भट्टी छुट्टी। बूँद, खून, सूद। कुँजी, कुर्सी, छुरी, रुई, कई। कुश्ती, सुस्ती, कृषि, खुशी। ऋषि, दृष्टि, मुनि, व्यक्ति, कवि। स्वादु, साधु। बूढ़ा, सूबा, चूहा। धूल, भूल, मूल, फूल। रूप, धूप, छूत, भूत। दुगुना, तिगुना, पुल, चुप, पुत्र। मन्दिर, मस्जिद। मूर्ख, मूढ़। मुख, मुख्य, मुंह। हीरा, हिम, हरि, हरिण, हिरन। परिश्रम, परिचय, परिक्रमा। प्रेरणा, अभिप्रेत, प्रेषक। बारीक, परीक्षा, तरीका, मरीज। अनुमति, अनुग्रह, अनुसार। उपद्रव, उपचार; उन्नति, उद्यम। क्रान्ति, भ्रान्ति, भाँति, गणित, मणि, फणि। पूज्य, पूजा, बापू, पूरा, पूर्व। मूर्ति, मुहुर्त। गरुड़, वरुण, अरुण, पुरुष, रुख, रुष्ट।

खास शब्दोंके लिंग

राष्ट्रभाषाके विद्यार्थियोंके लिए लिंग पहचाननेकी कठिनाई अवश्य रहती है। हरएक प्रान्तीय भाषामें तीन लिंग पाए जाते हैं; किन्तु हिन्दीमें दो ही लिंग होना उसकी सरलताका प्रमाण है। फिर भी लिंग-निर्धारणके कोई नियम न होनेसे कठिनता ही रहती है। इसलिए पढ़ते समय शब्दोंके प्रयोगोंपर विशेष ध्यान रखना चाहिए। धीरे-धीरे अभ्याससे यह कठिनाई दूर हो जाती है। यहाँ कुछ खास शब्दोंकी सूची दी जाती है। प्रायः इन शब्दोंमें लिंग-सम्बन्धी भूलें अधिकतासे पाई जाती हैं।

पुल्लिंग शब्द

नमस्ते, बाजार, कर्तव्य, दृष्टान्त, विचार, मतलब, आम, तार, अचरज, असर, प्यास, पतंगा, आश्चर्य, नींबू, कर्ज, उधार, लालच, खून, तमाशा, जादू, गुस्सा, महसूल, मदरसा, स्कूल, पँछी, खेल, कालिज, जलसा, ऋण, दर्जा, डाकखाना, छाता, रूमाल, नमक, साग, कम्बल, कागज, अँगूर, हिसाब-किताब, दिमाग, दाम, अन्दाज, सलाम, तूफान, आफिस, गश, बैंक, मर्ज, जहाज, हफ्ता, तालाब, उतार, देहात, लेप, सबक, प्रमाण।

स्त्रीलिंग शब्द

जय, भूख, विजय, साँस, पराजय, पुकार, आवाज, मार, तहसील, बूंद, दूकान, बोतल, सुपारी, दवा, दवात, छत, दोपहर, मारपीट, बरसात, कसर, बारिश, याद, खजूर, शर्म, खुराक, गरज, दौड़-धूप, तसवीर, धूप, तारीफ, पिस्तौल, देखरेख, जेब, पुलिस, खाद, मृत्यु, मौत, पुस्तक, नाक, दुआ, कारतूस, शिक्षा, तालीम, सजा, मशीन, अनेक, पतंग, गाँठ, चाय, मिर्च, चाह, टाँग, खोज, झाड़ू, प्यास।

समानार्थी शब्द

पुल्लिग–स्त्रीलिंग

कुर्ता	—	कमीज	नसीब	—	किस्मत
भाग्य	—	तकदीर	ग्रन्थ	—	किताब
शासन	—	हुकूमत	रिवाज	—	रीति
नुकसान	—	हानि	इम्तहान	—	परीक्षा
प्रयत्न	—	कोशिश	प्रयास	—	मेहनत
सफर	—	यात्रा	मकान	—	इमारत
प्रेम	—	मुहब्बत	चैन	—	शान्ति
अभ्यास	—	कसरत	पक्षी	—	चिड़िया
सबेरा	—	सुबह	जाड़ा	—	सर्दी
मौसम	—	ऋतु	मजा	—	बहार
आनन्द	—	मौज	पदार्थ	—	वस्तु

व्याकरणके कुछ मुख्य नियम

राष्ट्रभाषाके विद्यार्थियोंके लिए व्याकरणकी परिभाषाओंका एवं उसमें आनेवाले भेदों-उपभेदोंका जानना उतना जरूरी नहीं है, जितना कि शब्दों और वाक्योंके रूपोंको बनानेवाले प्रत्यय, उनसे होनेवाले परिवर्तन तथा उनके परस्परके सम्बन्धको जानना जरूरी है। सामान्य व्याकरण तो विद्यार्थी अपनी मातृभाषा द्वारा ही सीख लेता है। इससे अहिन्दी-भाषियोंको विशेष उपयोगी नियम, जिनके आधारपर भाषाकी रचना हुई है, जान लेना बहुत आवश्यक है। प्रारम्भिकके लिए ऐसे महत्वके कुछ सामान्य नियम यहाँ दिए गए हैं। इनके प्रयोगोंका खूब अच्छा अभ्यास कर लेना चाहिए। व्याकरणके इन नियमोंको समझनेके लिए उससे सम्बन्धित पाठ भी देखने चाहिए।

१. **विधि** (आज्ञावाचक) **की क्रिया में 'तू' के साथ मूल धातु 'तुम' और 'आप' के साथ क्रमशः धातु में 'ओ' और 'इए' प्रत्यय लगते हैं**; जैसेः—तू पढ़–लिख। तुम पढ़ो–लिखो। आप पढ़िए–लिखिए। (कभी-कभी मध्यम पुरुषका लोप भी रहता है। जैसे :—पढ़, उठ, लिखो, कहो, आइए, बैठिए।)

'करना', 'लेना', 'देना', 'पीना' के खास प्रयोग।

२. **पुल्लिग आकारान्त शब्दोंका बहुवचन 'आ' को 'ए' बदलनेसे बनता है**; जैसे :—लड़का–लड़के, घोड़ा–घोड़े। (दे०–पाठ ७)

३. **आकारान्त पुल्लिग शब्दोंको छोड़कर शेष पुल्लिग शब्दोंके एकवचन और बहुवचनके रूप एक-से ही रहते हैं**; जैसे :—एक बालक–तीन बालक; एक कवि–तीन कवि; एक आदमी–चार आदमी; एक साधु–तीन साधु; एक डाकू–पाँच डाकू।

४. स्त्रीलिंग के इकारान्त और ईकारान्त शब्दोंका बहुवचन बनाते समय उसमें 'याँ' लगाते हैं और दीर्घ 'ई' ह्रस्व 'इ' हो जाती है। जैसे :—तिथि–तिथियाँ; नदी–नदियाँ। (दे०–पाठ ७)

५. स्त्रीलिंगके अन्य शब्दोंका बहुवचन बनाते समय अन्तमें 'एँ' लगाते हैं; जैसे :—बात–बातें। माला–मालाएँ। वस्तु–वस्तुएँ। बहू–बहुएँ। दीर्घ 'ऊ' ह्रस्व 'उ' हो जाता है। (दे०–पाठ ७)

६. आकारान्त पुंल्लिग शब्दके साथ विभक्ति-प्रत्यय आनेपर एक वचन में भी 'आ' का 'ए' हो जाता है; जैसे :—घोड़ा–घोड़ेको। लड़का–लड़केने। (दे०–पाठ ८)

७. किसी शब्द-विशेषके साथ विभक्ति-प्रत्यय आनेपर उसके आकारान्त विशेषण या सम्बन्ध कारककी विभक्तिके प्रत्यय में 'आ' का 'ए' हो जाता है; जैसे :—राम का काला घोड़ा–राम के काले घोड़े को। मेरा कमरा–मेरे–कमरेमें। (दे०–पाठ ८)

८. वर्तमान, भविष्य तथा सकर्मक क्रियाके भूतकालमें लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के अनुसार आते हैं; जैसे :—मैं हँसता हूँ; तुम हँसते हो; आप हँसते हैं; लड़कियाँ हँसती हैं। लड़का हँसेगा, लड़के हँसेंगे; तुम हँसोगे। लड़का हँसा; लड़की हँसी; लड़के हँसे। अकर्मक क्रियाके कर्तामें 'ने' कभी नहीं लगता।

९. सकर्मक क्रियाके भूतकाल में क्रियाके लिंग और वचन कर्मके अनुसार आते हैं और कर्ता में 'ने' प्रत्यय लगता है; जैसे :—राम ने फल खाया; सीता ने फल खाया; राम ने पुस्तक पढ़ी; सीता ने रोटियाँ खाईं।

१०. नीचे लिखे बीस सम्बन्ध-सूचक अव्ययोंमें पहले 'के' या 'रे' प्रत्यय आता है— साथ, पास, आगे, पीछे, बाहर, अन्दर, सामने, नीचे, ऊपर, बिना, सिवा, बाद, कारण, द्वारा, बीच, लिए, अनुसार, नजदीक, समान, विरुद्ध। जैसे :—राम के पास; मेरे साथ। (दे०–पाठ १६)

११. नीचे लिखे सात अव्ययोंमें पहले 'की' या 'री' आता है:—

तरह, तरफ, **और** अपेक्षा, जगह, मार्फत, खातिर। जैसे :—राम की अपेक्षा, मेरी खातिर। (दे०–पाठ १६)

१२. अपनेसे छोटे और बराबरवालेके लिए '**तुम**', अपनेसे बड़े, बराबरीवाले या अपरिचितके लिए '**आप**'; और अपनेसे छोटे, अत्यन्त प्रिय, तथा अत्यन्त तिरस्कृत व्यक्तिके लिए '**तू**' का प्रयोग होता है। जैसे :—मित्र, **तुम** यह काम कर लो। गुरुजी, **आप** कहाँ जाते हैं? ईश्वर, **तू** बड़ा कठोर है! क्यों रे, रामू, **तूने** अभी तक खाना नहीं बनाया? (दे०–पाठ १२)